Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 vid 08 30 vxLr 2015 eY; 5 #i;

प्रधान की कलम से

ओ आर ओ पी तथा राष्ट्रीय सुरक्षा

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

कौटिल्य ने कहा था कि राष्ट्र में अमन शांति है और आप आराम की नींद सोते हैं, जान लो कि सरहद के प्रहरी सजग हैं, वे अपना उत्तरदायित्व बखूबी निभा रहे हैं अगर रक्षक को अपने हितों के प्रति शासक को याद दिलाना पड़े तो समझो कि समस्त जनता असुरक्षित महशुस कर रही है। राजन अगर राष्ट्र की सरहदें सुरक्षित रखना चाहते हैं तो सेना तथा उनके परिवारों की भलाई देखो, सरहदें स्वत: सुरक्षित हो जाएगीं। इसी तरह की भावनाएं हिंदूस्तान के अंतिम बादशाह जनाब बहादुरशाह जफर ने 1857 की क्रांति के दौरान सेना में बढ़ते रोष के बारे में व्यक्त की थी। उन्होने आगे यह भी कहा कि ''ना शाह इरान ने ना कजार रूस ने, अंग्रेज को बर्बाद किया कारतूस ने।'' अगर वर्तमान सैन्य हालात ना सुधारे गए तो निकट भविष्य में यह वक्तव्य भी यथार्थ हो सकता है कि ''ना चीन ने, ना पाकिस्तान ने, अपनी फौज को बर्बाद किया हिंदूस्तान ने।'' लै0जनरल (सेवा निवृत) एन एस बराड़ ने भी समाचार पत्र दि ट्रिब्यून 20 अगस्त 2015 में प्रकाशित हुए अपने लेख 'ए किंग एण्ड हिज सोल्जर्स' में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''किसी भी राष्ट्र की सेना की नाराजगी देशहित में नहीं हो सकती। भारतवर्ष में तो यह और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां पर सेना को भिन्न-2 प्रकार के आंतरिक व बाहरी सुरक्षा मुद्दों से जुझना पड़ता है।''

वर्ष 1962 में जब हिमालय की बुलंदी से आवाज आई, मां-बहनों ने अपने गहने वतन को दे दिए, बहनों ने अपने भाई और सुहागिनों ने अपने पति दे दिए। हमारे पास पहनने को कपड़ा ना था चलाने को कारतूस ना था हथियार बाबा आदम के वक्त के थे जब तापमान 50 डिग्री सैंटीग्रेट था, बर्फ 30 से 35 फुट थी लेकिन हमने 80 हजार चीनी फौज का मुकाबला किया। नफ्री में कमी थी जनरल बी एम कौल नेहरू परिवार का चहेता होने के नाते भगौड़ा हो गया जिसे सैनिक कभी माफ नहीं करता और ऐसे कार्यो का जघन्य अपराध माना जाता है लेकिन हमारे हौंसले तब भी बुलंद थे। इतिहास गवाह है कि अकेले अकेले ने बोनट से दस-दस को मारा तब भी वतन को दुआंए दी -''खुश रहना देश के प्यारों, अब हम तो सफर करते हैं। यही नहीं 1965, 1971 या 1999 की कारगिल की उपलब्धियां किसी से छुपी नहीं है। जब युद्ध होता है जनता का भरपुर प्यार और सत्कार हमें मिलता है जिस सहयोग के हम सदा ऋणी हैं।

सरहदों की रक्षा करने के साथ-साथ जब-जब वतन पर कोई मानवी या प्राकृतिक आपदा आई सेना ही काम आई। बाढ़ आई, बादल फटा, केदारनाथ बह गया, बोर वैल में बच्चा गिर गया, सेना को बुलाया गया क्योंकि वतन के प्रशासक राजनेता और बाबूओं ने कमीशन खाई और गलत काम होने दिए, उसे ठीक करने का जिम्मा सेना का। जब खुशी का अवसर आया तो राजनेता या सिनेमा कलाकार को बुलाया जाता है, तालियां पीटी जाती हैं वास्तविक हीरो को कोई याद तक नहीं करता। हमें उसका भी गम नहीं क्योंकि हम तो वतन के रखवाले हैं। मलाल तो तब हुआ जब हमारी भलाई के नाम पर राशन में, वर्दी में, निवास में, यहां तक कि हमारे कफन तक में घोटाले हुए जो सभी दिक्कतों के बावजूद जिंदा बचके आ गए। उन्हे राष्ट्र के बाबुओं ने अहसास दिलाया कि राष्ट्र के प्रशासक वे हैं। तीसरे पे-कमीशन से त्रासदी शुरू हो गई। हम हर बार एक सीढ़ी कम होते गए और बाबू एक सीढ़ी बढ़ते गए। रैंक पे दी तो वेतन कम कर दिया तब कैप्टन धन्ना पिल्लन ने 1987 में आवाज उठाने का साहस किया और 2010 तक कमी उच्च न्यायालयों कभी सर्वोच्च न्यायालय तक की लड़ाई जीती और 6 प्रतिशत ब्याज दर से 1987 से बकाया राशी के आदेश पारित हो गए। इस 26 वर्ष की लंबी अवधि को देखते हुए जिसमें कई तो भगवान को प्यारे हो चुके थे। सर्वोच्च न्यायालय ने 4 सितंबर को सोलिस्टर जनरल को पेश होने के आदेश पारित कर दिए तथा (रोडा) सेवा निवृत सैन्य अधिकारी एशोसिएशन कर्नल बी के शर्मा की अगुवाई में विजयी रही सरकार ने कहा कि 1600 करोड़ रूपये का भार है प्रत्येक अधिकारी को 1 से 6 लाख तक का लाभ हुआ। यहां बताना तर्कसंगत है कि फौजी सेवा सत्कार को मानने वाला प्राणी है। मजबूरी में ही मुंह खुलता है। अभी भी एक रैंक एक पैंशन के मामले वर्षों से

'k"k i;t&2 ij

'k"k i!t&1

लंबित पड़े है। सरकारें आती जाती रही लेकिन सज़ा में आते ही मुखौटा बदल जाता है। यहां तक कि राष्ट्र के 10 पूर्व सेना प्रमुखों ने प्रधानमंत्री का खुला पत्र लिखकर वन रैंक वन पैंशन लागू ना करने पर नाराजगी जाहिर की है और भूतपूर्व सैनिकों ने जंत्र-मंत्र चौक पर सरकार के रवैये के खिलाफ भुख हड़ताल भी शुरू कर दी जिसमें मरणवर्त पर बैठे पूर्व कर्नल पुष्पींद्र सिंह को जबरन हस्पताल में भर्ती करवा दिया गया लेकिन इसकी जगह सेवा निवृत हवलदार तेज सिंह ने ले ली। इनमें 96 वर्ष की आदरणीय नारी शक्ति एक पूर्व कर्नल बलबीर सिंह पत्नी चाम शिला भी है और पूर्व सेनापति व वर्तमान केंद्रीय राज्यमंत्री की सुपुत्री तथा सेना में कार्यरत कर्नल की पत्नी श्रीमति मरिनाली सिंह भी सैनिकों के संघर्ष में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं लेकिन इसके बावजूद भी राष्ट्र का सज़्मान बरकरार रखने वालों के आत्म सज़्मान की सरकार को कोई चिंता नहीं है। ऐसे हालात में कोई अनहोनी होने पर सेना का नैतिक साहस गिर सकता है और अनुशासन भी डगमगा सकता है।

14 अगस्त 2015 को दिल्ली पुलिस के संयुक्त आयुक्त ने भूतपूर्व सैनिकों के साथ जो बर्ताव किया वह निंदनीय तथा असहनीय है, जिनकी हम रक्षा करते आए हैं आज हम ही सुरक्षा के लिए खतरा बन गए। वर्ष 2013 में कांग्रेस ने 'एक रैंक एक पैंशन लागू' कोरी घोषणा की लेकिन इसका फंड मात्र 500 करोड़ रखा। मालूम था कि उनकी सरकार तो आएगी नहीं, जो मर्जी घोषणा कर, मरा हुआ सांप आने वाली सरकार के गले में डाल गए। फौजी के लिए अपनी इज्जत और बकार सर्वोज़म है। वे किसी से भीख ना मांगता, ना लेता, उन्हे मालूम था कि 8300 करोड़ केवल एक वक्त देय है जो हर वर्ष नए सेवा निवृत अधिकारियों से बढ़ता जाएगा। अब सरकारी बाबूओं द्वारा उकसाए गए नागरिक सेवा अधिकारी, भारतीय रेलवे के संगठन तथा अर्ध सैनिक बलों के अधिकारी भी ऐसी सुविधा की मांग कर रहे हैं। सेना का मनोबल तोड़ना और उसको नीचा दिखाना प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने ही शुरू किया था। सेना प्रमुखों को 1955 से डिफैंस सचिव के अधीन कर दिया था, 'जिसके तन ना फटे बुवाई, वो ज़्या जाने पीर पराई' अपने चहेते रिश्तेदारों जनरल बी एम कौल को सेना की कमान थमा दी जो मलाई तो खाता रहा और युद्ध शुरू होते ही भाग निकला। भूतपूर्व सैनिक अपने हक के लिए दशकों से लड़ रहे हैं और आगे भी कमोवेश वही हालात दिखाई दे रहे हैं लेकिन उन्होने कभी कहीं तोड़ फोड़ नहीं की- राष्ट्र की आन-बान-शान के लिए खड़े रहे। सैनिक अनुशासन प्रिय है, मांगना उसकी आदत नहीं, कुछ बोलने पर बाबू बगावती बर्ताव व बगावती स्वर बताकर सबको उनके बारे में भ्रम फैलाता है। सैनिक हक की बात करता है और हक के लिए ही लड़ता है। उनकी शान तिरंगे से है और कई साथियों को इसी में लिपटा कर घर छोड़ कर आये, उसके लिए सार्वजनिक रोया भी ज़्योंकि वह देश का सपूत था, जिसने तिरंगा सदा ऊंचा रखा, मरते दम तक उसे थामे रहा ज़्योंकि वह सेनानी था कोई राजनेता या बाबू नहीं।

सेना के उपर झूठे आरोप लगते हैं ज़्योंकि राजनीति इतनी घिनौनी हो चुकी है। अपराधी आतंकी विधान सभा तथा संसद में पहुंच जाता है, देश भक्त को कर्ज़व्य निष्ठा की सजा मिलती है जो जग जाहिर है। बाबू 10-11 डिग्री तापमान में हीटर चलाकर बैठता है और सैनिक शून्य या 50 डिग्री दोनों हालत में अपना कर्ज़व्य निभाते हैं फिर भी टीका टिप्पणी ज़्यों? नागरिक सेवा, अर्ध सैनिक बलों या पुलिस में व्यक्ति 33-37 वर्ष तक सेवा करता है जब कि सेना में 30-35 की आयु में सेवा निवृत भी हो जाता है। बाकी सेवाओं में उच्चतम पदों पर पदौन्नति का प्रावधान है कहीं कोई परीक्षा नहीं कोई बाधा नहीं। सेना में हर रैंक के लिए एक परीक्षा है, उसे उज़ीर्ण करने के बाद भी भरोसा नहीं कि पदौन्नति मिल ही जाएगी ज़्योंकि उपर पद कम होते जाते हैं। बहुत से सैनिक अधिकारी अपनी पदौन्नति के आदेश अपनी जेब में डाले हुए आयु सीमा एवं रिक्त पदों के अभाव के कारण सेवा निवृत हो जाते हैं। नागरिक और पुलिस सेवाओं में पूरे बैच पदौन्नत होते हैं। सेना में नहीं। अधिकारी अज़्सर कर्नल या समकक्ष तक ही बाहर आ जाता है। सिपाही की और भी दुर्दशा है जिस आयु में उसकी जिज़्मेदारी बढ़ती है वह सेवा निवृत हो चुका होता है। उसकी पैंशन इतनी नहीं होती कि वह अपने बच्चों की फीस भी अदा कर सके और उनके पुनर्निवास के साधन शून्य के बराबर हैं। उसके बावजूद जब-जब पे कमीशन बैठता है एक समकक्ष रैंक में सेवा निवृत होने वाले अधिकारी की पैंशन में अंतर जमीन-आसमान का हो जाता है। यही वह सेनानी मांग रहा है कि उसने राष्ट्र पर अपनी जवानी लुटा दी। उसे उसका जीने का अधिकार लौटा दो, वह सज़्मान से शांति में रहेगा ज़्योंकि अनुशासन उसकी रग-रग में है।

सिविल सेवा में अपंग होने के बावजूद उसे सेवा निवृत नहीं किया जा सकता बल्कि उसे पदौन्नति भी मिलती रहती है जब सेना में उसी दिन बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है और पैंशन सेवा अवधि के अनुसार तय होती है। पैंशन पे-कमीशन के हिसाब से तय होती है। वर्ष 1996 में सेवा निवृत मेजर जनरल आज सेवा निवृत हुए लै0कर्नल से कम पैंशन लेता है।

एक रैंक एक समान पैंशन से 25 लाख पूर्व सैनिक लाभान्वित होगें और राष्ट्र को 8300 करोड़ रूपये का बंदोबस्त करना होगा। इस आशय हेतू सज़ाधीश पार्टी ने चुनाव में वादा भी किया था। भाजपा ने इसे पूरा करने का वादा किया था, पूरा करना उसका उज़रदायित्व है। सर्वोच्च न्यायालय 2009 तथा इस वर्ष फरवरी में इस आशय की पूर्ति के आदेश दे चुका है। भारतीय सैनिक अपनी शान के लिए राष्ट्र से मिल रहे बर्ताव की वजह से केवल तीन वर्षों में 2012 तक 25063 सैनिकों ने सेवा छोड़ने का निर्णय लिया, जिसका मुज़्य कारण अंधकारमय भविष्य, पदौन्नति में विसंगतियां तथा अन्य सेवाओं में समकक्ष अधिकारियों की मिलती समयबद्ध पदौन्नति एवं सुख सुविधा इत्यादि मुज़्य कारण थे। ये सब तक के डिफैंस मंत्री ने सदन में खुद माना था।

कारगिल की पोस्ट जिसका नाम एक विजेता सेवा निवृत सैनिक कैप्टन मानसिंह के नाम है लेकिन जज़्मु-काश्मीर सरकार से उसे संवेदना के भी दो शज़्द नहीं मिले। ऐसी असंवेदनशील घटनाओं के कारण सैनिकों के राष्ट्रभक्ति के जज्बे को ठेस पहुंच सकती है। अधिकारिक तौर पर आज 14000 सैनिक अधिकारियों की कमी है। वायुसेना में हालात इससे भी बूरे हैं। इस वक्त विंग कमांडर स्तर के अधिकारियों को भी सभी परीक्षाएं पूर्ण कर लेने के उपरांत भी ना

कमांड मिल रही है और ना ही पदौन्नति के कोई आसार। ऐसे अधिकारी विशेष तौर पर पायलट जब नौकरी से बाहर आने का निर्णय लेगें तो राष्ट्रीय सुरक्षा में सेंध लगना स्पष्ट बात है ज्योंकि ये सभी अधिकारी एकमुश्त बाहर आएगें और तय है कि नागर विमानन क्षेत्र में ही जाएगें। एयर इंडिया शायद ही इतने लोगों को समायोजित कर सके तब यह विदेशी विमानन की ओर रूख करेगें। सुरक्षा प्रबुद्ध पाठक खुद समझ सकते हैं। अभी भी बहुत सारे सैनिक अधिकारी विदेशी कंपनियों के लिए कार्य कर रहे हैं। राजनेता को अपनी राजनैतिक रोटियां सेकनी हैं, उसे समाज से कोई सरोकार नहीं, बाबू उसी की कमजोरी का लाभ उठाकर सेना को नीचा दिखा रहा है और कमाऊं पूत बनकर राष्ट्र को चूना लगा रहा है। राष्ट्र के पास अभी भी समय है कि चेते और इन राष्ट्र भक्त सैनिकों का सज़्मान बहाल करे। राजनीतिकारों को भी राष्ट्र की उन्नति और विकास हेतू एकजुट होकर काम करना होगा तभी भारत पुन: सोने की चिड़िया बन सकता है।

भारत दूसरे देशों से सबक ले सकता है जैसे अमेरिकी नागर विमानन भारत में आकर भी अपने पूर्व सैनिकों को सज़्मान के तौर पर सबसे पहले जहाज में चढ़ने का अवसर प्रदान करता है तो फि ऐयर इंडिया ऐसा ज्यों नहीं कर सकता जिस पर कोई खर्चा भी नहीं है जो केवल सज़्मान की बात है। एक रैंक एक पैंशन बहुत सारे राष्ट्रों में लागू है जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, आस्ट्रेलिया तथा जापान इत्यादि। यू0एस0ए0 में एक सैनिक को उसके अंतिम वेतन का 50 से 100 प्रतिशत, आस्ट्रेलिया में 85 प्रतिशत, फ्रांस, जर्मनी व श्रीलंका में वेतन का 75 प्रतिशत, जापान में 70 प्रतिशत, मलेशिया में 60 प्रतिशत और यहां तक कि पाकिस्तान में 50 से 75 प्रतिशत तक निर्धारण करके पैंशन दी जाती है जबकि भारत में उसको अंतिम वेतन का केवल अधिकतम 50 प्रतिशत व डी0ए0 दिया जाता है जो कि एक सैनिक के गुजारे लायक भी नहीं बनता। महा निदेशक पुन: स्थापना एवं पुनर्वास की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र में हर वर्ष 700 से 800 अधिकारी रैंक तथा 60 से 70 हजार अन्य रैंक के सैनिक सेवा निवृत होते हैं। अकेले पंजाब में इस समय 2 लाख 62 हजार 108 भूतपूर्व सैनिक मौजूद हैं जिनके पुन: रोजगार व पुनर्स्थापना की सरकारी तौर पर अभी तक कोई कारगर नीति नहीं बनाई गई है। सेना में कठिनाईयों के मद्देनजर ब्रिटेन ने समकक्ष सिविल अधिकारियों के मुकाबले अधिक वेतनमान रखे थे फि आज विपरीत ज्यों है। पे-कमीशन बैठते हैं लेकिन सैनिक अपना पक्ष रख सकें जिसके लिए एक भी सदस्य उनका नहीं है। बेहतर हो कि भारतीय वर्ष 2005 तक सशस्त्र सैनिकों का वेतन रैंक पर आधारित था। कनिष्ठ रैंक वाला वरिष्ठ रैंक से अधिक पैंशन नहीं ले सकता था या अन्यथा वरिष्ठ को कनिष्ठ से कम नहीं दी जा सकती थी। छटे वेतन आयोग में मेजर जनरल तक के अधिकारियों को चार ग्रुप में बांट दिया - पे बैंड- 1 में सिपाही, पे बैंड- 2 में नायब सूबेदार, सूबेदार तथा सूबेदार मेजर। पे बैंड- 3 में में लैफ्टीनैंट, कैप्टन तथा मेजर जिसमें आनरेरी रैंक भी शामिल हैं तथ इनकी वार्षिक वृद्धि सेवा निवृति तक हैं। अब पैंशन सेवा अवधि के अनुसार है तथा पैंशन निर्धारण कनिष्ठतम पे स्केल से लिया जो नैचुरल जस्टिस के विरूद्ध है। वर्ष 2009 में 2006 से पूर्व के जे0सी0ओज तक की पैंशन में बढौतरी कर दी लेकिन विधवा तथा अधिकारियों को छोड़ दिया।

60 से 65 वर्ष की आयु में सेवा निवृत होने वाले अधिकारियों, उच्च न्यायालयों तथा सर्वोच्च न्यायालयों के न्यायधीश, कैबीनेट सचिव, लै0जनरल, सभी मुज़्य सचिव को समान पद समान पैंशन दे दी है, अब मेजर जनरल को भी यह सुविधा दे दी गई है। राजनेता ने एक पांच साल की अवधि पूरी करने पर ही यह सुविधा हासिल कर ली है। ज़्या यह नैचुरल जस्टिस के विरूद्ध नहीं है? सैनिक 35 वर्ष की आयु में सेवा निवृत हो जाता है उसकी कठिनाईयों को ज़्यों नजर अंदाज किया जा रहा है। प्रशासकीय सेवाओं के अधिकारियों को समय-समय पर सेना में भेजना चाहिए जिससे उनमें अनुशासन भी आएगा तथा सेना को मिल रही कठिनाईयों और विषमताओं की भी जानकारी होगी। वे एक दूसरे के पूरक बनेगें, वैमनस्य नहीं पालेगें जो आज हो रहा है। यह किसी हालात में भी देश हित में नहीं है।

विडंबना है कि आज तक किसी बाबू या राजनेता का बच्चा कभी भी फौज में नहीं देखा। यही तो एक दिखावे की राष्ट्रभक्ति है - हे राम, हम तो तेरे हैं, मरने को और बहुतेरे हैं। बहुत राष्ट्रों के अध्ययनों का तालुक फौज से है। हमारे अराध्य ब्रिटेन में ताज का हकदार पहले बेल्स का प्रिंस बने नेवी की सेवा करता है। उनको ये शिकायत है कि हम कुछ नहीं कहते अपनी तो यह आदत है कि हम कुछ नहीं कहते। कुछ कहने पर तुफान उठा लेती है दुनिया - कहने को बहुत कुछ था अगर कहने में आते। सैनिक आज भी राष्ट्रभक्त हैं और थोड़ा सा सज़्मान ही उनका खोया विश्वास लौटा देगा जिससे राष्ट्र की सरहदें स्वत: सुरक्षित हो जाएगीं केवल सार्थक पहल की जरूरत है।

लेखक पूर्व सैनिक अधिकारी (मेजर) के पद पर रहे हैं और 1971 के भारत-पाक युद्ध में सक्रिय भूमिका निभा चुके हैं।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरो प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

हमें जिन पर गर्व है

हरदीप

सरिता मोर

अंतराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले जींद के खेल गांव निडानी के चौधरी भरत सिंह मलिक मेमोरियल खेल स्कूल के अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी हरदीप ढिल्लो व सरिता मोर का वर्ड कुस्ती चैम्पियनशिप में चयन हुआ है। जाट सभा चंड़ीगढ़/पंचकूला इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये इन्हें बधाई देती है और आगामी बसन्त पंचमी के कार्यक्रम में दोनों खिलाड़ियों को सम्मानित करेगी।

चाहे तुम स्वतन्त्र हो या परतन्त्र, धनी हो या अत्यन्त दीन, तुम्हे चाहिये कि आलस्य का त्याग करके और धर्म में लीन रहकर सुकर्म करो। – अज्ञात

fdlku dh gkyr vk|j vk/k|fud [k|rh

उतम खेती, मध्यम व्यापार। किसी जमाने की ये कहावत आज उलट हो गई है। अब उद्योग–व्यापार जहां फल–फूल रहे हैं, वहीं कृषि भूमि के मालिक 'जमीन' पर आ रहे हैं। देश और प्रदेश का पेट भरने वाला अन्नदाता आज आफत में है। फसलों की बर्बादी देखकर प्रदेश में चार किसान जहां खुदकुशी कर चुके हैं। वहीं 10 किसानों की सदमा लगने से मौत हुई। संभव है पोस्टमार्टम रिपोर्ट व ततीश के बाद ये आंकड़ा कम या ज्यादा हो जाए, लेकिन अहम मुद्दा यह है कि हरियाणा में भी महाराष्ट्र व उड़ीसा जैसी घटनाएं क्यों हुई। हरित प्रदेश हरियाणा का समृद्ध किसान इतना बेबस व लाचार क्यों हो गया कि उसने मौत को गले लगा लिया? इसकी वजह भी है। ओले तो पहले भी गिरे हैं, परंतु इस बार जैसा वज्रपात शायद ही कभी हुआ हो। सभी जानते हैं कि रबी की फसल ही यहां के किसानों की रीढ़ होती है। गेहूं की फसल में प्रदेश के कई जिलों में नुकसान हुआ है, जबकि दक्षिण हरियाणा के रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ व झज्जर आदि जिलों में सरसों की फसल भी बर्बाद हुई है।

किसानों में निराशा की कई वजह हैं। सबसे बड़ी वजह है उत्पादन लागत बढ़ना व मुनाफा कम मिलना। ये सच है कि एक बड़ा शिक्षित वर्ग खुद को खेती से दूर कर चुका है। साधारण किसानों का भी मोह भंग हो रहा है। वे अपनी जमीन बंटाई पर दे रहे हैं, लेकिन काश्तकार को जो लागत आ रही है, उसकी तुलना में मुनाफा मामूली है। ऐसे में यदि मामूली मुनाफा भी राम की मार से छिन जाए तो बेबस किसान को कैसे राहत मिलेगी? यदि फसल बीमा योजना लागू होती तो किसानों को किसी का मुंह ताकना नहीं पड़ता, लेकिन सत्ता की सुस्ती के चलते किसान सरकार की प्राथमिकता में शामिल ही नहीं हुए । छोटे से उद्योग का बीमा कराने में बैंक से लेकर सरकार तक सबकी रूचि होती है, लेकिन किसान की कमाई फिक्र करने में किसी की रूचि नहीं। जिन किसानों ने बैंकों से ऋण लेकर खेती की हुई है, उन सहकारी बैंकों ने भी इस बार उनका बीमा नहीं किया था। फसल बीमा व फसल के लिए इस बार यहां के किसानों को किसी भी फसल के लिए बीमा कवर में शामिल नहीं किया गया। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि उत्पादन लगातार बढ़ रही है। जोत लगातार छोटी हो रही है। पहले जमीन का विस्तार था, लेकिन बढ़ती आबादी ने जोत का साइज छोटा कर दिया है। शिक्षित वर्ग खेती से दूर हो गया है। स्थानीय स्तर पर श्रम शक्ति का अभाव हो गया है। स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट लागू करने जैसी जो बातें हुई थीं, उनसे सत्ता ने मुंह फेर लिया। स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार कुल लागत का 50 प्रतिशत मुनाफा किसान को मिलना चाहिए, लेकिन यहां तो समर्थन मूल्य भी मिल पा रहा है। बाजरा कई वर्ष से समर्थन मूल्य पर नहीं बिका है। सरसों का समर्थन मूल्य कई वर्षों से खुले बाजार से कम रहा है। समर्थन मूल्य में कम से कम इतनी तो बढ़ोतरी होनी ही चाहिए, जिससे काश्तकार को न्यूनतम मजदूरी मिल सके। सरकार प्रीमियम देकर मुआवजे की आफत से भी बच सकती है, यदि फसल बीमा अनिवार्य कर दिया जाए, लेकिन यहां तो बिल्ली के गले में घंटी बांधने वाले का इंतजार है।

चिंतन

बेमौसमी बारिश और ओलावृष्टि ने किसानों की कमर तोड़ दी है। प्रकृति के इस प्रकोप के सामने सभी किंकर्तव्यविमूढ़ नजर आ रहे हैं। सरकार किसानों के जख्म पर मरहम लगाने के लिए नित नई घोषणाएं कर रही है, लेकिन धरतीपुत्र बुरी तरह टूट चुका है। खून–पसीने से उपजाई फसल की बर्बादी बर्दाश्त नहीं कर पाने के कारण 14 किसानों की मौत हो चुकी है। कुछ को दिल का दौरा पड़ा तो कई ने जान दे दी। प्रकृति तो पहले भी नाराज हुई है, फसलें बर्बाद होती रही हैं, लेकिन हरियाणा जैसे राज्य में ऐसी स्थिति पहली बार आई है। आखिर इस बार ऐसा क्यों हो गया, यह गहन चिंतन का विषय है।

मनन

माना जाता है कि किसान बहुत सहनशील होता है, जीवन के बड़े से बड़े झटके वह हंसते हुए झेल जाता है। फसल के नुकसान पर आत्महत्या जैसा कदम उठाने की तो वह सोच भी नहीं सकता, लेकिन इस बार हालात बदले हुए हैं। जरूर कुछ ऐसा है जिस पर ध्यान नहीं जा रहा। भारी भरकम कर्ज तले दबे ये किसान और अधिक नुकसान बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं है। बीमा नीतियों में खामी उनकी परेशानी को और बढ़ा रही है।

हल

फसल पर खर्च व उससे मिलने वाली आय का तुलनात्मक अध्ययन करें तो कई सवाल उठ खड़े होते हैं। स्थिति में सुधार लाना है तो किसानों को खाद, पानी, बीज और बिजली के लिए मिल रही सरकारी सहायता दुरुस्त करनी होगी। उन्हें कृषि की नवीनतम तकनीकों से अवगत कराया जाए कि कैसे लागत कम की जाए सबकी रूचि होती है, लेकिन किसान की कमाई की फिक्र करने में किसी की रूचि नहीं। जिन किसानों ने बैंकों से ऋण लेकर खेती की हुई है, उन सहकारी बैंकों ने भी इस बार उनका बीमा नहीं किया हुआ है। फसल बीमा व मौसम बीमा के लिए अभी तक पूरे देश व देश के लिए सामान्य नियम कानून नहीं बन पाया है। योजनाएं कभी किसी जिले की किसी खास फसल के लिए जमीन पर उतरती है तो कभी किसी खास। क्या प्रदेश सरकार की कृषि नीति व्यावहारिक है? क्या सरकार के मुआवजा पैकेज से फसली नुकसान की भरपाई हो सकेगी?

केवल कर्महीन ऐसे है जो भाग्य को कोसते है और जिनके पास शिकायतों का बाहुल्य है। – जवाहरलाल नेहरू

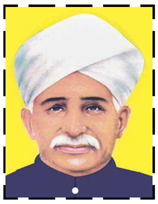

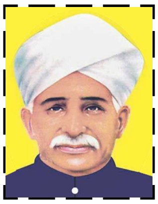

महानतम किसान पुरोधा

सर छोटूराम ने किसानों को अधिकारों की प्राप्ति हेतु संघर्ष की प्रेरणा दी

"ओ किसान तू आँक अपना सही मूल्य तू सारे जग के जीवन का आधार है क्यो अपनी शक्ति से बैठा बे खबर है तेरी मेहनत से महकता हर घर है चौकीदार छोड़, राष्ट्रपति का जीवन निश्चित तेरे खून-पसीने पर निर्भर है।।"

चौ० सर छोटूराम

"रहबरे-आजम दीनबन्धु, महानतम किसान मसाहा, चौधरी सर छोटूराम एक ईमानदार राजनेता, जबर्दस्त संगठनकर्त्ता, किसानों में राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने वाले अग्रणी विचारक, साम्प्रादायिक एकता स्थापित करने वाले अप्रतिम राजनीतिज्ञ, राष्ट्रीय एकता और समन्वयकमूलक संस्कृति को आगे बढ़ाने वाले कुशल सामाजिक एवं उत्कृष्ट देशभक्त थे। उन्होंने भोले-भाले किसानों को बोलना सिखाने, अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। मिस्टर जिन्ना की साम्प्रदायिकता, कांग्रेस की साहूकार एवं हिन्दू लॉबी को विफल करके हिन्दु-मुस्लिम-सिख-ईसाई एकता का अनुपमं उदाहरण प्रस्तुत किया।

उक्त विचार वरिष्ठ शिक्षाविद व दीनबन्धु सर छोटूराम स्मृति मिशन राष्ट्रीय महासचिव प्रोफेसर डा० दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने छोटूराम की जयंती पर सम्पन्न समारोह एवं राष्ट्रीय विचार संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। अध्यक्षता शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय भोपाल की वरिष्ठ प्रोफेसर मंजुला पोरस ने की। मुख्य अतिथि वाणिज्य विभाग के प्रोफेसर डा. राकेश राणा थे। ३२ वर्ष तक महाविद्यालय के प्राचार्य रहे। प्रख्यात शिक्षाविद प्रो० दुर्गपाल सोलंकी ने कहा कि सर छोटूराम एक युग पुरुष थे। उनका जीवन जनसेवा का आदर्श उदाहरण है और बहुमुखी प्रतिभा के धनी व बड़े विचारशील, विवेकी एवं सिद्धान्तवादी महानुभाव थे। उन्होंने गरीबों, दलितों, शोसितों एवं उपेक्षित लोगों के लिए जीवन पर्यन्त लड़ाई लड़ी। गरीबों के सच्चे हमदर्द होने के कारण वे "दीनबन्धु" कहलाएं। डा० सोलंकी ने कहा कि वे सभी के हितैषी और उन्हें किसी जाति विशेष या वर्ग से बांधना उनके साथ अन्याय होगा। उन्होंने केवल किसान और मजदूरों के लिए ही नहीं अपितु दुकानदारों, कर्मचारियों और व्यापारियों के हितों के लिए बड़े काम किए। प्राचार्य सोलंकी ने कहा कि छोटूराम जी कहा करते थे कि 'ए-भोले किसानों, दो बातें सीख लें-एक तो दुश्मन को पहचान लें और दूसरा बोलना सीख लें। उनका कहना था कि इस देश में बहुत से आदमी ऐसे हैं जो बिना खुराक के बीमार होते हैं और कुछ ऐसे हैं जो खुराक को पचाने के लिए दवायें चाहते हैं। इस अन्तर को तो हमें समाप्त करने के उपाय करने हीं होंगे। दीनबन्धु ने किसानों के हितों की लड़ाई सिर्फ आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर हीं नहीं लड़ी, बल्कि सामाजिक बुराईयों के खिलाफ भी उन्होंने आन्दोलन चलायें।

प्रो० दुर्गपाल ने कहा कि आज छोटूराम हमारे बीच नहीं हैं लेकिन हमारे पास उनके महान विचार, नीति एवं कार्यक्रमों की विशाल रूपरेखा है। यदि सही मायने में देश का विकास करना है तो हमें दीनबन्धु के बताए रास्ते का अनुसरण करना होगा, तभी हम एक नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब होंगे। डा० सोलंकी ने मिशन के कार्यकर्ताओं एवं जनसमुदाय का आहवान करते हुए कहा कि वे सर छोटूराम के दिखलाए मार्ग पर चलते हुए रचनात्मक कार्यों में सक्रियता से जुटने का संकल्प बृत लेकर राष्ट्र निर्माण के उनके सपनों को साकार करें क्योंकि उनके विचार व कार्यक्रम आज भी सर्वथा सार्थक एवं प्रासंगिक हैं।

समाजवादी विचारक व राजनेता डा० दौलतराम चतुर्वेदी ने कहा कि सर छोटूराम गरीबों के मसीहा थे। यही कारण है कि हिन्दु, सिख व मुसलमान किसानों ने मिलकर उनको रहबर-ए-आजम' की उपाधि से विभूषित किया। वास्तव में गरीबों के साथ छोटूराम जैसा प्रतिबद्ध दुसरा कोई नेता दिखाई नहीं देता। डा० चतुर्वेदी ने कहा कि चौधरी साहब ने हिन्दु-मुसलिम-सिख-ईसाई एकता का सुन्दर एवं स्थायी रूप प्रस्तुत किया। उनके घोर आलोचक भी एक स्वर से स्वीकारते हैं कि काश, यदि छोटूराम जीवित रहते तो देश की अखण्डता बची रहती।

किशोरीरमण पोस्ट-ग्रेजुएट कॉलेज, मथुरा के राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष-प्रोफेसर डा० सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि चौधरी छोटूराम दो दशकों से अधिक पंजाब की राजनीति में छाये रहे तथा उनके विचार व प्रभावी कार्यो से सम्पूर्ण हिन्दुस्तान प्रभावित हुआ। भाखड़ा बांध के निर्माण उनकी सोच का जीता जागता स्मारक है। हमारे देश के इतिहास में छोटूराम का नाम हमेशा किसान जाग्रति से जुड़ा रहेगा। उनका कहना था 'सूदखोरों ने चूस-चूस कर किसानों को बेचरा बना दिया है, उन्हें मैं राजा बनाऊंगा।' उन्होंने जाति-धर्म-वर्ग के भेदभाव के बिना उन्हें संगठित किया और उन्हें आत्म सम्मान के साथ जीने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने किसान हितों के कई विधेयक पास करवा कर कानून बनाएं। किसानों को कर्जो से दुटकारा दिलवाया। गिरवी रखी हुई जमीन किसानों को वापिस दिलाई।

कमला राजा शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर की वरिष्ठ प्रोफेसर डा० सुधासिंह ने कहा कि छोटूराम जी ने राजनीतिक स्वतंत्रता से पहले आर्थिक आजादी को महत्व दिया। किसान शोषण की मुक्ति के सम्बन्ध में महात्मा गान्धी तथा दीनबन्धु की विचारधारा में मतभेद था। गांधी जी स्वराज्य का तात्पर्य ग्राम राज्य अथवा किसान राज्य समझते थे लेकिन छोटूराम आजादी को प्रमुख मानते थे। इसलिए वे इसी मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी से अलग होकर नेशनल यूनियनिस्ट पार्टी की स्थापना की।

इतिहासविद् कुंवर प्रो० अरूण प्रताप सिंह 'चमन' ने कहा कि इस बीसवीं सदी की शुरूआत में दो महान विभूतियें - चौधरी छोटूराम और चौधरी चरण सिंह ने यह अनुभव किया कि जब तक किसानों में चेतना पैदा नहीं होती, तब तक हम आर्थिक व सामाजिक उन्नति की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकते। दोनों ने किसानों में जाग्रति तथा साम्प्रदायिक सद्भाव के लिये कार्य किया। यही वजह रही कि दोनों महापुरूषों को हर तबके व हर धर्मो के मानने वाले किसान, इन्हें अपना नेता मानते थे।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ठा. तेज सिंह वर्मा 'सौनिगा' ने कहा कि दीनबंधु पिछड़ेपन का मुख्य कारण शिक्षा की कमी मानते थे। वे चाहते थे कि शिक्षा का प्रकाश-प्रचार दूर-दराज के गांवों तक फैले। सामाजिक और आर्थिक उत्थान शिक्षा के बिना नहीं हो सकता। उन्होंने पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिम उत्तर प्रदेश व दिल्ली में अनेक शिक्षा संस्थानों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कई गरीब विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने के लिये अपनी ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की।

समाजसेवी कुंवर अजीत सिंह ने कहा कि सर छोटूराम राजनेता के साथ-साथ एक पत्रकार भी थे। वे भ्रष्टाचार के घोर विरोधी थे। उन्होंने अपने द्वारा प्रकाशित 'जाट-गजट' नामक समाचार पत्र द्वारा गरीब वर्गो के लोगों की आवाज बुलन्द की, वहीं 'ठगी के बाजार की सैर' लेखमाला छाप कर भ्रष्टाचार पर करारी चोट की। चिन्तक ने कहा कि छोटूराम ने वकालत का व्यवसाय जनसेवा के लिए अपनाया था। वे उचित फीस लेते थे तथा किसान-मजदूरों-गरीबों की निःशुल्क वकालत करने का एक कीर्तिमान स्थापित किया। कुंवर नरेन्द्र सिंह ने कहा कि रहबरे-आजम जहाँ तक सम्भव होता था,

दुर्भाग्य में कोई किसी का साथी नहीं होता। देखिए, मरते समय मनुष्य की आंख भी फिर जाती है। – अज्ञात

मुकद्दमों में राजीनामा करवाने का प्रयास करते थे। यहाँ पर अनेक वकील भाई बैठे है, उनसे हमारा निवेदन है कि वे सर छोटूराम का अनुसरण करते हुए गरीब-किसान-मजदूरों से फीस न लें। चौ० लक्ष्मण सिंह एडवोकेट ने छोटूराम को सहृदय व व्यवहार कुशल राजनेता की संज्ञा देते हुए गरीब लोगों की मुफ्त वकालत करने की घोषणा की जिसका करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

समाजसेवी हरेन्द्र उपाध्याय ने कहा कि छोटूराम जी गरीब किसान के घर पले-बढ़े थे। उन्होंने ग्रामीण लोगों की जिन्दगी को नजदीक से देखा था और उनके दुःख, तकलीफों एवं कठिनाईयों को स्वयं भुगता था। इन्हीं कारणों से इन वर्गों के लिये वो इतिहास में महानपुरूष बने। रहनुमा, मसीहा व इतिहास पुरूष बने।

प्रख्यात विचारक एवं लेखक जस्टिस सी.पी. सिंह के अनुसार छोटूराम के हृदय में किसान उद्धार का ज्वार था। उसके शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई। विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को, रामदास ने शिवाजी को, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को, गुरू गोविन्द सिंह ने बन्दा बैरागी को जिस तरह कर्त्तव्य बोध कराया था, ठीक उसी प्रकार सर छोटूराम ने किसानों को उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों का बोधा कराया। महाभारत की याद आते ही श्रीकृष्ण केन्द्र पर बैठे मिलते हैं, स्वन्त्रता संग्राम की याद आते ही गान्धी जी, सुभाषचन्द्र बोस व राजा महेन्द्र प्रताप के चित्र सामने आ जाते है। पाखण्ड-खण्डन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन होते हैं। जब किसान हित के प्रणेता की बात उठती है तो दीनबन्धु छोटूराम पहल करते पाये जाते हैः-

"किसान को जिस दिन अपनी शक्ति की पहचान होगी।
विजय हर मोर्चे पर उस दिन आसान होगी।
धरती कपेंगी व आकाश में होगी हलचल
किसान के मुंह जिस दिन पैदा जबान होगी।
सर छोटूराम की चिट्‌ठी हर कृषक के नाम होगी।
आगे कृषक दमन की हर नीति नाकाम होगी।
सारे कृषक एक स्वर सुनायेंगे दुखड़ा जिस दिन।
नींद हर सरकार की उस दिन हराम होगी।"

मध्यप्रदेश महिला सभा की अध्यक्ष एवं समाजसेवी माता श्रीमती दुर्गेश कुमारी ने कहा कि सर छोटूराम ने किसानों को एक नया सन्देश दिया। असन्तोष का पाठ पढ़ाया, विज्ञान की देन से भरपूर लाभ उठाने को कहा। उन्नति वही करता है जो वर्तमान स्थिति से असन्तुष्ट है। जो भाग्य भरोसे रहता है, उसके अन्दर प्रगति और उत्थान का भाव नहीं आ सकता। किसानों को आत्मनिर्भरता का पाठ सीखना चाहिए। सर छोटूराम किसानों को सबल-गतिशील बनाकर देश का राजा बनाना चाहते थे। उनका सपना एक दिन साकार होकर रहेगा। जो चलता है, वहीं पंहुचता है। जो रूकता है, वह झूठे सपने देखता रहता है। सर छोटूराम के सपने को साकार करने के लिए शहर और गांव में विषमता की बढ़ती खाई को कम करना आवश्यक है। देहात बनता है तो देश बनता है। देहात नीचे गिरता है तो देश नीचे गिरता है। वास्तव में सर छोटूराम ने राजा महेन्द्र प्रताप की तरह एक विचार क्रान्ति को जन्म दिया। उन्होंने किसानों को आँख खोलकर देखने को कहा, ताकि उनके विचार गांव-गांव पहुंचकर विचार क्रान्ति को जन्म दें। उनके विचारों ने जन-जन को आन्दोलित किया हैः-

"जब असंख्य योगी फैलाते सदविचार
जब सेवक करते कर्म निष्काम
जब आकाश की बरसती अनुकम्पा
जब ऊँकार उदघोष देता शुभ परिणाम
जब सपूत देश हित में हो, बलिदान करते ऊँचा नाम
जब पूर्वजों के तप का होता सार फलीभूत।
तब जन्म लेता एक किसान उद्धारक सर छोटूराम।।"

शिक्षाविद् डा० नरेश कुमार सिंह का कहना है कि नेतृत्व का उत्तरदायित्व गहन होता है। महान पुरूष जो आचरण करते हैं, साधारण पुरूष उसका अनुगमन करते हैं। अपने सजग और निस्वार्थ नेता पैदा करना इस समय की सर्वोपरि आवश्यकता है। आज फिर से हमें महाराजा सूरजमल सम्राट का शौर्य, दीनबन्धु सर छोटूराम जी की सदसीख, किसान मसीहा चौधरी चरण सिंह जी का संकल्प व महान क्रान्तिकारी राष्ट्रपति राजा महेन्द्र प्रताप जी की समझ पैदा करनी है। किसानों के पास अतीत की प्रेरणा स्वर तथा भविष्य की सम्भावना है। संघर्ष की क्षमता का अभाव नहीं है। प्रकृति खाली स्थान नहीं छोड़ती। किसान कौम के पास अनगढ़ हीरो की कमी नही हैं, केवल उनको चमकाना भर है। किसान नेतृत्व द्वारा एक दिन पूरी मानव जाति का मार्ग दर्शन होगा। हर काली रात के बाद प्रभात होता है और हर तपती गर्मी के बाद वर्षा होती है। आज पूरा समाज ऊँची उड़ान भरने के लिये अपने पंख तौल रहा है। किसान कौम से देश व धर्म दोनों को बचाने वाले नेतृत्व का उद्‌य होना निश्चित हैं। उस शुभ घड़ी के आगमन की पूरा समाज प्रतीक्षा कर रहा है।

राजा महेन्द्रप्रताप मिशन के महासचिव श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह प्रेमी ने कहा जीवन्त, आस्थावान तथा टिकाऊ समाज को उसकी अपनी गरिमा को याह दिलाने में छोटूराम जी का बड़ा योगदान है। जो अन्नदाता है, वह सारे जग का आधार हैं किसानों को एकता के सूत्र में बांधकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। संघर्ष व सृजन के दो मूलमंत्रों को अपना कर ही किसान-शक्ति आगे बढ़ती रहेगी। उन्होंने आहवान किया कि:-

"पूरी जीवन शैली पर फिर से विचार करना होगा।
संगठन, संघर्ष, शोध का सत्कार होगा।।
किसान बनेगा जिस दिन देश का राजा।
उस दिन दीनबन्धु का सपना साकार होगा।।"

गुरूकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन के आचार्य सोहनलाल ने कहा कि सर छोटूराम विज्ञान के प्रभाव को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने कहा था के आधुनिक काल विज्ञान, शिक्षा, संस्कृति, कला, भाषण, लेखन तथा संगठन का है। किसान इनमें से किसी को नहीं जानता। वह तो भूतकाल का खण्डर मात्र है। परन्तु उसका यह विश्वास कि न्याय मिलेगा। दया का पात्र है। आह! वह कितना भोला व सीधा है। आज समाज को छाटूराम जी की सीख पर गम्भीरता से विचार करना है ताकि वह जीवन के हर पहलू पर विचार कर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

आर्य समाजी नेता भी महावीर सिंह आर्य ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि दीनबन्धु अति संवेदनशील थे। वह किसानों के दुःख से कराह उठते थे और हर समय उनकी इच्छा रहती थी कि इन लोगों के जीवन में खुशहाली आए। प्राध्यापक जतीश उपाध्याय का कहना था कि छोटूराम ने वकालत के साथ समाज सेवा का कार्य भी किया। उनके जीवन का उद्देश्य परहित था। महिला समाज सेवी श्रीमती दीपशिखा सिंह ने कहा कि सर छोटूराम ने निराशा से घिरे किसानों के प्राणों में नई आशा का संचार किया। राजेश पचौरी ने दीनबन्धु को गरीब असहाय, भूखे लोगों तथा मानवता का महान सेवक कहकर अपने भाव व्यक्त किये। जे.के. पराशर ने कहा कि छोटूराम के विचारों से यही प्रकट होता है कि किसान को दो काम तत्परता से करने हैं - पहला उसे अपनी पीड़ा को आवाज बनाना है और दूसरा अपनी सोई हुई शक्ति को जगाना है। आबकारी अधीक्षक श्री नवीन सक्सेना के विचार में सर छोटूराम के अनुसार किसान पृथ्वी व आकाश की मुसीबतों का खिलौना है। यदि किसान बरवाद होता है तो देश बरबाद होता है। यदि किसान आबाद होता है तो देश आजाद होता। अतः उन्होंने अपनी जीवन की सम्पूर्ण बाजी लगाते हुए किसानों की पीड़ा, वेदना और उनके दुःख दर्दों का निवारण करने का प्रयास किया। शिक्षक नेता श्री अरविन्द चौधरी ने कहा कि छोटूराम जी का कहना था कि किसान गरीबी का बोझ इसलिये ढो रहा है क्योंकि उसने अपने को नहीं पहचाना। अपनी छिपी शक्ति को क्रियाशील नहीं किया। जिस दिन वह अपने अन्दर झांकेगा तो उसे पता चलेगा कि उसके अन्दर तूफान की बिजली छिपी है। दीनबन्धु किसानों की इसी ताकत को जगाना चाहते थे।

श्री आर.के. अग्रवाल ने कहा कि दीनबन्धु किसानों के साथ-साथ व्यापारी वर्ग व छोटे दुकानदारों के भी पास हितैषी थे उन्होंने मन्ड़ी तथा बाजार व्यवस्था के सुचारू संचालन हेतु व्यावहारिक कदम उठाए। किसान नेता श्री बनवारी सिंह ने कहा कि सर छोटूराम के अनुसार किसान कमाता है और अन्य वर्ग उसका सुख भोगते हैं। कर वसूली का अधिकतर भाग शहरों पर खर्च कर दिया जाता है।

किसान जो कुम्भकरण की नींद सोया हुआ है, उसे सन्तोष और भाग्यवाद के दर्शन से बाहर निकालकर प्रयत्न व पुरूषार्थ के लिए तैयार करना, सर छोटूराम के जीवन का उद्देश्य था।

परीक्षा नियन्त्रक प्रोफेसर कृष्ण प्रताप मलूक सिंह पोरस ने कहा कि सर छोटूराम के अनुसार मनुष्य का सारा शोषण अज्ञान के कारण है। जो भी ज्ञान विज्ञान में आगे है, वह अज्ञानी का शोषण करता है। यदि किसान के बालक हर मशीन के इन्जन का बांधना व खोलना खुद सीख लें तो दूसरे उनका शोषण नहीं कर पायेंगे। अतः उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के भरसक प्रयत्न किए। श्री ध र्मेन्द्र कुमार किसान नेता ने कहा कि सर छोटूराम किसानों के कर्ज से बेहद चिन्तित रहते थे। सरकारी मशीनरी, साहूकार, सेठ तथा शहरी शेठ सभी किसान के खून के प्यासे हैं। दीनबन्धु ने किसानों को सचेत करते हुए कहा कि परमात्मा उसी की सहायता करता है, जो अपनी स्वयं सहायता करता है। उन्होंने किसानों को कर्म की महानता का दिग्दर्शन कराया। युवा नेता श्री श्रीकान्त राजौरा ने कहा कि रहबरे आज़म ने किसानों को उनके शत्रुओं के खिलाफ आजीवन प्रेरित किया और पुरानी लीक से हटकर नवीनता लाने के लिये कहा कि :-

"सक्रिय हो सार्थक करने को मचलना होगा।
बनकर तूफान तीव्र गति से चलना होगा।।
आंखें खोलकर देखना होगा जीवन यथार्थ।
किसान को तुरन्त करवट बदलना होगा।"

प्रधानाचार्य डा० महीपाल सिंह ने सर छोटूराम को किसानों का 'महान देवता', डा० पूरन सिंह ने 'गरीबों का देवदूत' प्रधानाचार्य योगेन्द्र राणा ने 'महानतम किसान-पुरोधा' प्राचार्य वीरपाल सिंह ने सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय के लिए 'समर्पित योद्धा' तथा श्री रेशम सिंह ने किसान-मजदूर-दुकानदार-सर्वहारा वर्ग का 'महान मसीहा व उद्धारक' की संज्ञा से विभूसित किया।

विद्यार्थी कल्याण सभा के अध्यक्ष अजीत कुमार ने छोटूराम के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें भारत-रत्न उपाधि से विभूषित करने, संसद भवन में आदमकद चित्र तथा जींद व चंडीगढ़ में उनके नाम पर विश्वविद्यालयों की स्थापना पर बल दिया।

शिक्षाविद् प्रो० डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने दीनबन्धु सर छोटूराम के अनेक संस्मरणों की चर्चा करते हुए बताया कि उनके पैतृक गांव नगला जोधना-कागारौल (आगरा) उ०प्र० में निवास करते हुए छोटूराम ने एल.एल.बी. की शिक्षा आगरा कालेज, आगरा में ग्रहण की थी तथा तत्कालीन प्रख्यात व प्रतिष्ठित जमींदार प्रपितामह ठा. नारायण सिंह जी द्वारा राजामण्डी, आगरा में संस्थापित 'जाट बोर्डिंग हाऊस' (वर्तमान महाराजा सूरजमल कालेज) में रहकर वकालत व्यवसाय शुभारंभ किया था। पितामह ठा. दलीप सिंह जी सैक्रेटरी, आगरा डिस्ट्रिक बोर्ड छोटूराम की सुविधाओं का बड़ा ध्यान रखते थे। नगला जोधना निवासी एक युवक जिसे प्रो. दुर्गपाल सिंह ने बुजुर्ग के रूप में देखा था। मात्र दो रुपये में छोटूराम का हुक्का भरते थे जो आज भी स्मृति हेतु सुरक्षित रखा है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि उक्त निवासों में रहकर दूसरे बड़े किसान नेता चौधरी चरण सिंह जी ने बी.एस.सी की शिक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात आगरा कालेज के होस्टल में रहे। दोनों ही महानुभावों और दुनियां में अपने सत्कारों से प्रसिद्ध हुए।

प्रारम्भ में श्रीमती बिमलेश सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर तथा इन्द्रपाल विनोद मुखिया जी ने छोटूराम जी के चित्र पर माल्यार्पण कर विचार-संगोष्ठी एवं समारोह का शुभारम्भ किया। कु. अक्कू सिंह एवं रितिका ने सवागत गीत प्रस्तुत किए अतिथियों का परिचय, स्वागत, वन्दन एवं अभिनन्दन श्रीकान्त राजौरा तथा श्याम सिंह तोमर ने किया। संजीव कुमार कक्कू ने आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। असम रॉरक्लस पब्लिक स्कूल शिलांग, मेघालय के प्रिंसिपल श्री पी.के. राजौरा ने ओजस्वी कविता के द्वारा किसानों को प्रेरणा देते हुए आहवान किया कि :-

"अपने पंखों को तौल, उडान से विजय मिलती है।
संगठन, सहयोग, सदज्ञान से विजय मिलती है।
तेरे भीतर छिपी है, तूफान की बिजली।
उस छिपी शक्ति की पहचान से विजय मिलती है।।"

- प्रो० डॉ० दुर्गपाल सिंह सोलंकी

}s"k Hkko

आजकल के भौतिकतावादी युग में लोग अपने दुःखों के कारण षायद इतने दुःखी नहीं हैं जितना कि दूसरों के धन ऐष्वर्य सम्पदा आदि सुखों को देखकर द्वेशभाव के कारण दुःखी हैं। यह दुःख मनुश्य का अपनी कलुशित ईर्श्या भावना के कारण है। लोगों को दूसरों की प्रगति प्रेरणा नहीं देती अपितु द्वेश भाव उत्पन्न करती है। आजकल लोग दूसरों की प्रगति से प्रेरणा लेकर स्वयं पुरुशार्थ करके प्रगति करने के स्थान पर द्वेशभाव से जलते हुए उसे नुकसान पहुंचाने का प्रयास करने लगते हैं। किसी से बड़ा बनने के स्थान पर उसे छोटा करने का प्रयास करना द्वेश भावना का परिचायक है। दरअसल लोग 'केकड़ा संस्कृति' के अनुगामी हो चुके हैं। स्वयं ऊपर उठने के स्थान पर एक दूसरे की टांग खींच कर उन्हें नीचे गिराने का प्रयास ठीक उसी प्रकार प्रारंभ कर देते हैं जैसे एक खुले टब में केकड़े दीवार के सहारे बाहर निकलने का प्रयास करने वाले केकड़े को नीचे खींच लेते हैं और कोई भी केकड़ा खुला टब होने के बावजूद बाहर नहीं निकल पाता। द्वेशभाव के कारण उत्पन्न इस केकड़ा संस्कृति के कारण ही आज का मानव उत्थान के स्थान पर पतन की ओर अग्रसर है।

ईर्श्यालु मनुश्य स्वयं ही अपनी ईर्श्याग्नि में जलता है। ऐसा द्वेशभाव रखने वाला व्यक्ति दूसरों को कश्ट तो देता है पर स्वयं महाकश्ट पाता है। दरिद्रता द्वेश की बड़ी बहन है और द्वेश व्यक्ति को दरिद्रता की ओर धकेल देता है। जिस प्रकार कीट वस्त्र को चुपचाप कुतर देता है उसी प्रकार ईर्श्या मनुश्य को नश्ट कर देती है। ईर्श्या समस्त पापों की जड़ है, दूसरे को धकेलकर स्वयं सत्तारूढ़ होने की महत्वाकांक्षा व्यक्ति को नीचे गिराती है।

द्वेशभाव द्वेशी को ही नुकसान पहुंचाता है इसका उदाहरण एक कथानक से मिलता है एक सेठ ने भीख मांगने वाले याचक को कहा "मैं तुम्हें मुंहमांगी भीख दूंगा लेकिन साथ बैठे भिखारी को उससे दोगुनी दूंगा, बोलो क्या चाहिए" भिखारी प्रस्ताव सुनकर पहले चुप हो गया फिर द्वेश भाव के कारण बोला "तो सेठ जी मेरी एक आंख फोड़ दीजिए" मन ही मन उसने सोचा मैं तो एक आंख से देखता रहूंगा पर यह पड़ोसी तो अंधा हो जायेगा। पर सेठ जी ने कहा "मैंने देने की बात कही थी लेने की नहीं। तुम द्वेश के कारण कुछ लेने के लायक भी नहीं हो।" ईर्श्या मनुश्य की अपनी हीनता के बोध से जन्म लेती है परंतु वह हीनता को समाप्त करने के स्थान पर और अधिक बढ़ा देती है।

द्वेश भावना आज के युग में मनुश्य की अवनति का मुख्य कारण है इसलिए यदि हम सही मायनों में प्रगति करना चाहते हैं तो अपने मन में ईर्श्या द्वेश के भाव को समाप्त करना होगा। अथर्ववेद में माहि द्रुहः। अथर्ववेद 9/5/4 द्वारा वेद् भगवान ने द्वेश ना करने का आदेष मनुश्यमात्र को दिया है। अप द्वेशो अप ह्वरः। ऋग्वेद 5/20/2 द्वारा मनुश्य को स्वयं द्वेश व कुटिलता दूर करने का संदेष दिया। इसीलिए मनुश्य यदि अपनी प्रगति उन्नति चाहता है तो वह संसार में किसी भी प्राणी से द्वेश ईर्श्या और वैर ना करे। मन वचन कर्म से किसी का बुरा ना सोचे किसी के प्रति वैर की भावना ना रखे। द्वेशी का मन मर जाता है उसका उत्साह समाप्त हो जाता है और मरे बुझे मन वाला मनुश्य संसार में कुछ नहीं कर सकता। इसलिए अपनी स्वयं की प्रगति के लिए द्वेश भाव को त्याग वैर विरोध को छोड़कर सबके प्रति प्रेम आदर का भाव रखना ही कल्याण का पथ है।

औरत वफा और त्याग की मूर्ति है, जो अपनी मेजबानी से, अपने को विल्कुल मिटा कर पति की आत्मा में एक अंगबन जाती है। – प्रेमचन्द

अमर शहीद शाहमल सिंह

çk- gjljunkl] ejB

बिजरौल की कुल्लो पट्टी में लौतिया जाट की पांच सन्तानों में सबसे छोटा नत्थन था। लौतिया की मृत्यु पर उसकी पत्नी सती हो गई थी। नत्थन के तीन पुत्रों में अमीचन्द सबसे योग्य और सम्मानित थे। इनके तीन पुत्रों में शाहमल सबसे बड़े थे। युक्ति और प्रमाण के आधार पर उनका जन्म 1797 ई. में हुआ था।

शाहमल ने दो विवाह किए थे। पहली पत्नी गांव नान्दनौर (हरियाणा) के चौधरी रामसुख की पुत्री राजवन्ती थी, जिससे तीन पुत्रियाँ उत्पन्न हुई, दूसरा विवाह गांव हेवा (मेरठ) के चौ. किशनपाल की पुत्री धन्नों के साथ हुआ जिससे गरीब, दिलसुख और मेदा नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए। दिलसुख का शाहमल के साथ खासा लगाव था और इसी कारण उसका पुत्र लिज्जामल सदैव अपने बाबा के साथ रहता था। वह भी अपने बाबा की तरह स्वाभिमानी और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत था। शाहमल के बाद क्रांति की बागडोर उसी ने संभाली थी।

यहां पर यह बताना आवश्यक है कि स्वतंत्रता सेनानियों ने गुरू विराजानन्द दण्डी की प्रेरणा से सन् 1856 में मथुरा के जंगल में क्षेत्र के प्रमुख व्यक्ति एकत्र हुए थे। उस ऐतिहासिक सभा का आंखों देखा विवरण मीर मुश्ताक मीरासी ने उर्दू में लिपिबद्ध किया था। जो बैठक में उपस्थित था। मीरासी ने लिखा है कि सन् 1856 में भादो मास मथुरा, तीर्थगाह के जंगल में एक पंचायत हुई। इसकी सदारत (अध्यक्षता) के लिए एक नाबीना (अंधे) दरवेश (फकीर) विरजानन्द दण्डी को लाया गया था। बैठक में नाना साहब, अजीमुल्ला खां, रंगे बापूजी, बादशाह बहादुरशाह के शहजादे, मुसलमान साई मियां, महमूद शाह आदि मौजूद थे। कहा जाता है कि इसमें बल्लबगढ़ के राजा नाहरसिंह, मेरठ के क्रांतिकारी शाहमल और शामली के चौधरी मीर सिंह भी मौजूद थे। इस महापंचायत में सैंकड़ों पंचायतों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे और यह पंचायत चार दिन तक चली थी।

बिजरौल गाँव कुल्लो तथा मोली या लादुरा नाम की दो पट्टियों में बँटा हुआ था। चौरासी देश खाप से साढ़े सात–जोहड़ी, आरिफपुर खेड़ी, पुट्ठी, बिजवाड़ा, सिरसली, रंछाड़ और बिजरौल की चौधराहट शाहमल के पास थी और बिजवाड़ा उनका रजवाड़ा तथा राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था। बुद्धिमान होने के साथ–साथ वे परिश्रमी किसान, कुश्ती और घुड़सवारी के शौकीन और गरीब किसानों के हमदर्द थे। छोटी–सी उम्र से ही आसपास के ग्रामीण अपनी समस्याओं को लेकर उनके पास आने लगे थे और इलाके में उनकी फौज के लिए सप्लाई ले जाने वाले बंजारे व्यापारियों के दल पर आक्रमण किया और उन्हें लूट लिया। रात में ही उन्होंने बड़ौत की पुलिस चौकी पर चढ़ाई कर दी। चौकी पर कोई अंग्रेज अधिकारी मौजूद नहीं था, वहाँ उपस्थित सिपाही भाग खड़े हुए। अगले दिन उन्होंने बड़ौत तहसील पर आक्रमण किया। जैसे ही क्रांतिकारियों ने तहसील में प्रवेश किया, अंग्रेज तहसीलदार चुपके से निकल गया लेकिन उसकी मेम वहीं रह गई। लूटपाट और तोड़फोड़ के बाद शाहमल मेम को अपने साथ किशनपुर बराल के रास्ते बिजरौल ले गए। खलिहानों में गेहूँ की फसल की गहाई चल रही थी। मेम को बैल हांकने पर लगा दिया गया। तपती धूप में बैलों के पीछे चलते हुए मेम बेहोश होकर गिर पड़ी। यह तमाशा देखने के लिए आसपास के सारे गाँववासी इकट्ठे हो गए। होश में आने पर शाहमल ने मेम से कहा, "आपसे हमारी कोई रंजिश नहीं है। आपको यह दिखाना था कि हम और हमारी औरतें कितनी मेहनत से अनाज पैदा करते हैं और तुम्हारे साहब लोग हमसे सारा ही छीनना चाहते हैं। आप हमारा कष्टपूर्ण जीवन महसूस करो और देखो कि हम कहाँ गलत हैं? मेम से कोई छेड़खानी नहीं की गई और अगले दिन मेम को वापस बड़ौत भेज दिया गया।

शाहमल ने गाँव बिलोचपुरा के एक बलूची नबीबख्श, जिसका दिल्ली दरबार में आना–जाना था, के पुत्र अल्लादिया को अपना दूत बनाकर दिल्ली भेजा ताकि वहाँ से अंग्रेजो। के खिलाफ हथियारों की मदद मिल सके। लेकिन वह कोई उत्तर नहीं ला सका। बागपत के नूर खाँ और उसके पुत्र महताब खाँ की दिल्ली दरबार में पहुँच थी, उन्होंने शाहमल के सामने बहादुरशाह जफर से मिलने का प्रस्ताव रखा। शाहमल ने सर्वखाप पंचायत के नेताओं के साथ दिल्ली के लाल किले में बादशाह जफर से भेंट की और अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने बादशाह से माँग की कि उन्हे। हथियार मुहैया कराए जाएँ जिससे वे अंग्रेजों को देश से खदेड़ सकें। बादशाह ने उन्हें कोई आश्वासन तो नहीं दिया उलटे अपने पास रसद की भारी कमी का रोना रोया। हाँ इतना जरूर किया कि बागपत–बड़ौत की सूबेदारी शाहमल को दे दी। जाटों ने बावली के जंगल में एक पंचायत की और तय किया कि दिल्ली को भूखा नहीं मरने दिया जाएगा। बैलगाड़ियों में भरकर अनाज, दालें, गुड़ तथा पशुओं के लिए चारा दिल्ली भेजा जाने लगा।

यह शाहमल ही थे, जिनके कारण अंग्रेज यमुना नदी की ओर से दिल्ली पर हमला करने में असमर्थ थे। शाहमल ने किसानों को एकजुट कर दिया था जिससे अंग्रेजों को राजस्व मिलना बिल्कुल बंद हो गया। उनकी अद्भुत संगठन शक्ति के कारण उनकी टोली में 6000 से अधिक क्रांतिकारी इकट्ठे हो गए थे। उनके सिपहसालारों में हिलवाड़ी के पंडित रुडेराय, धीरा कहर, निरोजपुर का अचल सिंह गुजर, बिलोचपुरा का नबीबख्श बलूच, हेवा का सूरत सिंह, बडका गांव के अल्लादिया तथा कई रवे राजपुत, पेगा गांव के लाल मुइन और सालकराम प्रमुख थे। छपरा गांव के त्यागियों, बासौद के जादूगरां और बिचपुरी के गुजरों ने उनके नेतृत्व में क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। अहेड़ा के गूजरों ने बड़ौत और बागपत की लूट तथा दिल्ली–मेरठ सड़क बंद करने में हिस्सा लिया। सिसरौली के जाटों ने शाहमल के सहयोगी सूरजमल की मदद की। मुजफ्फरनगर जिले के शामली, जौला और शोरम के जाटों के अन्य क्रांतिकारियों से मिलकर अंग्रेजों से बुढ़ाना का किला छीन लिया और शामली तथा थाना भवन तहसीलों पर कब्जा कर लिया। बुलन्दशहर के मशहूर क्रांतिकारी बलीदाद खाँ को भी सहायता भेजी गई। प्रतिकार स्वरूप डनलप ने 16 जुलाई को एक मजबूत घुड़सवार टूकड़ी लेकर मेरठ से प्रस्थान किया और हिन्डन नदी पर स्थित धौलाना पहुँचा जहाँ के कुछ धनी साहूकार अंग्रेजों का समर्थन कर रहे थे। वहाँ उसे सूचना मिली कि शाहमल डौला गांव पर हमला करने वाला है। इसका कारण था कि जब शाहमल ने बड़ौत तहसील पर हमला किया, वहाँ के तहसीलदार, रोहतक निवासी करम अली ने नवल सिंह राजपूत की सहायता से खजाने को हटाकर डौला गांव तक पहुंचा दिया था। इसीलिए आश्चर्य नहीं था कि शाहमल, जो

सज्जन पुरूष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी व्यक्ति को पीडित नहीं करता। – न्यू मैन

तीन मील उत्तर में स्थित गांव बासौद में डेरा डाले हुए थे, डौला पर आक्रमण करें। डनलप ने उन्हें बासौद में ही घेरने की योजना बनाई। लेकिन बासौद पहुँचने पर उसे पता चला कि शाहमल रात के अंधेरे में बासौद से निकल गए। वहां डनलप को लगभग आठ हजार मन अनाज, दालें तथा खाद्य सामग्री हाथ लगी जो दिल्ली के स्वतंत्रता सेनानियों के पास भेजी जाने के लिए तैयार थी। गोरों ने इस सामग्री को नष्ट कर दिया। बासौद मुस्लिम–त्यागियों का गाँव था, पर शामल का साथ देने का मूल्य चुकाना पड़ा। गांव में पकड़े गए सभी 1500 व्यस्क पुरूषों को गोली से उड़ा दिया गया।

जुलाई 1857 में क्रंतिकारी नेता शाहमल को पकड़ने के लिए ब्रिटिश सेना संकल्पबद्ध हुई। एक अंग्रेज अधिकारी ने लिखा है कि ऐसा लगता था कि सारा देश हमारे विरूद्ध खड़ा हुआ है। लोगों को इकट्ठा करने के लिए चारों ओर ढोल बजाए जा रहे थे और भीड़ एकत्र होकर आगे बढ़ रही थी। शाहमल के भतीजे भगत (भुक्ता) के हमले से बाल–बाल बचकर ब्रिटिश सेना का नेतृत्व कर रहा डनलप भाग खड़ा हुआ और भगत ने उसे बड़ौत तक खदेड़ा। इस समय शाहमल के साथ 2000 शक्तिशाली सैनिक थे। शाहमल आमने सामने की अपेक्षा गुरिल्ला प्रणाली से युद्ध करने के विशेषज्ञ थे। हथियारों और प्रशिक्षित सेना की कमी के कारण प्रत्यक्ष युद्ध लड़ने की उनकी क्षमता नहीं थी। बड़ौत के दक्षिण भाग में अंग्रेजों और शाहमल के अनुयायियों में घमासान संघर्ष हुआ, मुठभेड़ आमने–सामने की थी। किसान सैनिक निर्भीकता के साथ लड़ रहे थे। युद्ध को क्रीड़ांगन समझने वाले किसान सैनिक अंग्रेजों की प्रशिक्षित और हथियारों से लैस सेना के समक्ष मृत्यु का आलिंगन कर डटे रहे। शाहमल स्वयं भयंकर मारकाट मचा रहे थे परन्तु नियति का चक्र अब उनके पक्ष में न था। वे बुरी तरह घायल हो चुके थे। रूधिर की धारा बह रही थी।

मेजर डी. डब्लू. विलियम्स एक बड़ी फौज लेकर शाहमल को घेरने के लिए रात–दिन एक किए था, लेकिन 3500 जाटों की फौज ने गोरों के नाक में दम कर रखा था। तभी 60वीं ब्रिटिश रायफल के 40 यूरोपियन जवानों की, जो एनफील्ड रायफल से लैस थे, गुराना के बेहा नाम के दलदल वाले जंगल में अचानक शाहमल से मुठभेड़ हो गई। दुसरी ओर से विलियम्स के घुड़सवार रिसाले ने शाहमल को घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ। आमने–सामने की लड़ाई में दोनों ओर से सैकड़ों लोग मारे गए। खुद शाहमल भी बहादुरी की मिसाल कायम करता हुआ देश की आजादी के लिए युद्ध क्षेत्र में रहा। rglhynkj dje vyh u mls igpku fy;k vkj mldk flj dkV fy;kA vxzstk u dje vyh dk buke dj rkj ij ckxor dh uokch c['k nh x;hA

मेरठ में कलक्टर डनलप ने 21 जुलाई 1857 को तार द्वारा शिमला में उच्चाधिकारी को सूचना दी कि मेरठ से आई फौजों के विरूद्ध लड़ते समय शाहमल अपने 6000 साथियों सहित मारा गया।

शाहमल का वीरगति को पाना अंग्रेज अधिकारियों के लिए महत्वपूर्ण विजय थी। उनकी नींद हराम करने वाला, इलाके का ‘सबसे बड़ा बागी’ शाहमल युद्ध भूमि में शहीद हो गया था। इलाके में डर बैठाने के लिए vxzstksa 'kkgey dk flj ,d yEcs Hkkys ij Vkxdj xko&xko ?kek;k] lkFk esa o fcfV'k >.Mk ¼;fu;u tSd½ Hkh fy, gq, FksA Muyi us fy[kk gS ßfd cMh l[;k esa ,d= ckxh tkVks us mldk flj okfil ysus ds fy, nj rd gekjk ihNk fd;kA vxzstks ds }kjk ckck 'kkgey ds dVs gq, jDrjfatr flj dk yEcs Hkkys dh uksd ij ?kek;k tkuk fcztjkt rFkk pkjk lh [kki d ykxks fy, vR;Ur vieku tud] pukrh i.k rFkk ihMknk;d dÑR; FkkA pkjk lh [kki e 'kkd dh ygj Qy xbZ vkj çfrjk/k 'kiFk yh xbZAß बाबा शाहमल द्वारा दिखाए गए मार्ग पर ही चलना उसके अनुयायियों ने श्रेयसकर समझा। बाबा शाहमल के पौत्र लिज्जामल का भी इतना आतंक हो गया था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के लगान वसूल करने वाले अधिकारी क्षेत्र में जाने का साहस नहीं करते थे। खाकी रिसाले ने लिज्जामल को उसके साथियों के साथ जिनकी संख्या 32 बताई जाती है, धोखे से पकड़ लिया और फांसी पर लटका दिया। गांव बिजरौल में गोरों ने बहुत अत्याचार किए और अनेक लोगों को वहां भी फांसी पर लटका दिया गया। जिन–जिन गांवों के लोगों ने शाहमल तथा लिज्जामल को सहयोग दिया था, उन्हें दण्डित किया गया।

1857 की क्रांति के बाद बागपत के एक दर्जन गांवों को अंग्रेजों ने बागी घोषित कर दिया था। बागी होने के मतलब था कि पूरे परिवार के लिए जिन्दगी का संकट। जमीन कुर्क कर ली गई, पशु तक नीलाम कर दिए गए थे। इतिहास गवाह है 1857 की क्रांति को चिंगारी देने वाले गांवों में बिजरौल, सिरसली, खड़खड़ी, हिसावदा, बामनौली, बिजवाडा, चौबाली, औढ़ापुर, बासौद और बिलोचपुरा आदि शामिल रहे हैं। इन गांवों में अंग्रेजीं सेना का जबरदस्त विरोध हुआ था और कई अंग्रेजों को क्रांतिकारियों ने मार गिराया था। 1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजों ने सर्वप्रथम उन्हीं गांवों को बागी घोषित किया था, जहां पर अंग्रेजों को मार डाला गया था। बागी होने का मतलब था कि यहां के लोगों की जमीन कुर्क कर ली गई थी तथा पशुओं तक की सार्वजनिक रूप से नीलामी कर दी गई। यहां के लोग मजदूरी करके ही अपना पेट पालते थे। बागी घोषित गांवों की जमीन कुछ अंग्रेजों के पिट्ठुओं को दे दी गई थी, जिसके बाद अंग्रेजों के पिट्ठू चौधरियों की श्रेणी में आ गए थे। जिन गांवों को बागी घोषित किया गया, वहां के लोग एक–एक रोटी को तरस गए थे। बागी होने वाले गांव आज भी अन्य गांवों की अपेक्षा प्रगति दौड़ में काफी पिछड़े हुए हैं। मगर इस अत्याचार के बाद भी क्रांतिकारियों ने हार नहीं मानी और अंग्रेजों के खिलाफ बगावत का झंडा उठाए रहे। बागपत के गांवों में क्रांतिकारियों का नेतत्व बाबा शाहमल सिंह ने किया था। बाबा शाहमल ने फौज तैयार की और जान में जान रहने तक अंग्रेजों से लड़े। बहादुरी के साथ उन्होंने मातृ भूमि के लिए प्राण न्यौछावर कर दिए थे। शहमल वीरता की मूर्ति अखाड़े के पहलवान थे और राष्ट्रभक्त थे। उनका अनुशासन, स्नेह, उनकी निर्भिकता उनकी दूर–दृष्टि और अपने साथियों पर असीम विश्वास था। अब कहां है ऐसा नेता। वे कर्मवीर थे वचनवीर थे। खतरे के समय वह कभी कांपे नहीं। वे योद्धा थे रोग–शया पर मरना नहीं चाहते थे। वह तो युद्ध भूमि पर मरना चाहते थे। शाहमल स्वभाव के सरल व्यक्ति थे, किन्तु परिस्थितियों ने उन्हें योद्धा बना दिया था। साहस और शौर्य के वे मिश्रण थे। वे वीरों में अग्रणीय थे। उनकी संगठन शक्ति अद्भूत थी। उनका देश प्रेम, अदम्य साहस और वीरता क्षेत्र के पुरूष रत्नों के इतिहास में सदैव अंकित रहेंगे। शाहमल की शहादत समय की शिला पर उतारी गई एक ऐसी घटना है जिसे मिटाया नहीं जा सकता। वह वृद्धावस्था की पौरूष की गाथा है। यह देशभक्ति और आजादी के संघर्ष की मिसाल का जीता–जागता स्मारक है।

वह अपने जीवन की शहादत की अन्तिम घड़ियों तक साहस और कर्मयोगी की अनुपम मूर्ति रहे। वे मरकर भी अमर हैं।

ft;s rks tku yMkrs jgs oru ds fy,]
ejs rks gks x, dqcku lxBu ds fy,A

कर्त्तव्य पालन ही चित की शांति का मूल्य मंत्र है। – प्रेमचन्द

tkV fodkl ds fopkj.kh; eqn~ns

–राकेश सरोहा

जाट भारत की प्राचीन तथा महत्वपूर्ण जाति है। जो कि अपनी बहादुरी, मेहनत तथा स्पष्टवादिता के लिए जानी जाती है। देश की सीमाओं पर शहादत देना व देश के लिए अन्न का उत्पादन करना जाटों के लिए सदैव ही सम्मानीय रहा है। परंतु भारत में रहने वाले जाट समाज का यह दुर्भाग्य रहा है कि आजादी के पश्चात विकास के मामले में जाट जाति पूर्ण विकास नहीं कर पायी जबकि अन्य कई जातियों ने साम, दण्ड, भेद सभी प्रकार की नीतियां अपनाकर आर्थिक सम्पनता को प्राप्त किया है जबकि मेहनत करने वाले जाट अपनी स्पष्टवादिता के कारण विकास के मामले में पिछड़ते चले गये तथा आज जाट समाज को अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है वर्तमान सामाजिक परिवेश में जाट समाज की समस्याओं पर विचार किया जाये तो जाटों के विकास के मामले में पिछड़ने के दो महत्वपूर्ण कारण नजर आते हैं। प्रथम तो जाट सरकार से अपने हक प्राप्त करने में पूर्णतया सफल नहीं हो पाये हैं। जैसे जाट आरक्षण बहुत देरी से लागू होना, समगांव व समगोत्र विवाह पर सरकार द्वारा प्रतिबंध ना लगाना, सरकार द्वारा जाट समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली खाप पंचायतों को मान्यता ना देना, जाट महापुरुषों की जीवनियों तथा बहादुरी के कार्यों को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल ना करना, सरकार द्वारा गैरजाट शब्द को प्रतिबंधित ना करना, जाटों की भावनाओं का सम्मान करते हुए किसी भी जाट हस्ती को **'भारत रत्न'** ना देना, किसी भी जाट महापुरुष के जन्म दिवस पर सरकार द्वारा राष्ट्रीय अवकाश घोषित ना करना जैसे कई मुद्दे हैं जिस पर सरकार द्वारा सकारात्मक रुख नहीं अपनाया गया है। जिससे जाट समाज सरकार के उपेक्षापूर्ण रवैये के कारण विकास की सड़क पर सही ढंग से आगे नहीं बढ़ पाया है। जाट समाज के विकास में पिछड़ने का दूसरा कारण जाट समाज की खुद की कुछ कमजोरी तथा गलत नीतियां भी हैं। जाट समाज की कुछ प्रमुख कमजोरियां जाटों में एकता की कमी, जाटों की मीडिया में भागीदारी की कमी, बच्चों को उच्च तथा तकनीकी शिक्षा ना दिला पाना, जाटों में तकनीकी रोजगार की कमी, जाटों की व्यापारिक कार्यों में असफलता, नशे तथा अहंकार का त्याग ना करना, सामाजिक कुरीतियों का पूर्ण त्याग ना करना आदि प्रमुख कमजोरियां हैं। जिसके कारण जाट वर्तमान समय में पूर्ण विकास नहीं कर पाये हैं। इसलिए जाट समाज को यदि विकास की सफलता को प्राप्त करना है तो समस्त जाट समाज के सदस्यों, जाट सभाओं, खाप संगठनों, जाट समाज के सम्पन वर्ग, किसान वर्ग, व्यापारी वर्ग तथा नौकरी पेशा वर्ग आदि समस्त वर्गों को जाट समाज के हित, मान सम्मान व सरकार से अपना हक प्राप्त करने के लिए पूर्णतया जाट एकता दिखानी चाहिये तथा नीति बनाकर जहां संयुक्त रूप से संघर्ष करना चाहिये वहीं जाट समाज को सामाजिक परिवेश का मंथन करते हुए सामाजिक कुरीतियों तथा अवगुणों को समाप्त करना चाहिये। इस प्रकार यदि जाट समाज एकजुट होकर संघर्ष करता है तो सरकार से अपनी निम्नलिखित मांगें/हक मनवाने चाहिये।

समगोत्र विवाह को अमान्य बनाना : उत्तर भारत की हिन्दु जातियों तथा विशेष रूप से जाट समाज में समगोत्र में होने वाले विवाह को सामाजिक मान्यता प्राप्त नहीं है। जिसके कारण प्रतिवर्ष कई युवक व युवतियां आधुनिकता के नाम पर पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित होकर एक ही गोत्र का होने के पश्चात भी विवाह कर लेते हैं जिसके कारण हिंदु संस्कृति प्रभावित होती है तथा सामाजिक तनाव उत्पन्न होता है क्योंकि हिंदु संस्कृति तथा जाट समाज में एक गोत्र के सभी लोगों को एक परिवार की तरह माना जाता है तथा जिसमें आपसी विवाह निषेध ा है परंतु हिंदु विवाह अधिनियम में समगोत्र विवाह प्रतिबंधित ना होने के कारण समगोत्र विवाह के दुष्परिणाम सामने आते हैं। समगोत्र विवाह के कारण जहां समाज का नैतिक चरित्र गिरता है वहीं समाज में अनावश्यक लड़ाई–झगड़े बढ़ते हैं तथा दूसरा समगोत्र विवाह करने वाले जोड़े भी सामाजिक बहिष्कार के कारण तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। वैज्ञानिक दशष्टिकोण से भी समगोत्र विवाह से उत्पन्न होने वाले बच्चों में भी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखकर केंद्रीय तथा राज्य सरकारों को चाहिए कि वह हिन्दु विवाह अधिनियम में आवश्यक संशोधन करके समगोत्र विवाह पर प्रतिबंध लगायें।

समगांव विवाह को प्रतिबंधित करना : भारत देश तथा जाट समुदाय की दो तिहाई जनसंख्या गांवों में निवास करती है तथा गांवों में शहरों के मुकाबले आधुनिकता तथा पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव कम है जिसके कारण गांवों में सभी जातियों के लोगों में भाईचारा कायम है जिसके कारण सभी ग्रामीण आपस में एक दूसरे के साथ भाई तुल्य तथा बहन तुल्य संबंध रखते हैं। परंतु पिछले कुछ वर्षों से टीवी चैनलों के माध्यम से गांवों में भी पश्चिमी संस्कृति ने पैर पसारने शुरू कर दिये हैं जिसके परिणामस्वरूप समगांव में विवाह के भी प्रकरण सामने आ रहे हैं जिसके कारण गांव का भाईचारा तथा सौहार्दपूर्ण माहौल खराब होता है तथा विवाद बढ़ने पर खाप पंचायतों का आयोजन करना पड़ता है। समगांव में होने वाले विवाह प्रकरणों में सबसे अधिक परेशानी ऐसे परिवारों को उठानी पड़ती है जिनके बच्चों ने समगांव में विवाह किया होता है। उनके बच्चों के अविवेकपूर्ण विवाह से ऐसे परिवारों को सामाजिक विरोध ा का कई रूपों में सामना करना पड़ता है। जिसके परिणाम कई बार काफी खतरनाक होते हैं। इस प्रकार समगांव में होने वाले विवाह हमारी संस्कृति तथा जनता की इच्छाओं के विपरीत होते हैं। इस संबंध में केंद्र तथा राज्य सरकारों को चाहिए कि वे समगांव विवाह को प्रतिबंधित करने का अधिनियम बनायें।

खाप पंचायतों को मान्यता देना : खाप संगठन जाटों तथा अन्य कई जातियों की महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाएं हैं जोकि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने तथा गांवों में उत्पन्न विवादों का पंचायत व्यवस्था के अंतर्गत दूर करने का कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त खापें लोगों के नैतिक आचरण की मजबूती के लिए समाज को दिशा निर्देश भी देती हैं। जब कोई सामाजिक तथा जातिय विवाद अत्यधिक बढ़ जाए तो खाप पंचायतों का आयोजन करके सामाजिक विवाद तथा मतभेद को दूर करने का कार्य भी खाप पंचायतें लोक अदालत की तरह करती हैं परंतु इनको कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है। राज्य सरकारों को खाप प्रतिनिधियों के लिए योग्यता निर्धारित करके खाप पंचायतों को लोक

कुसंगति के कारण किसका नाश नहीं होता मूर्ख की मति में पड़ने से चातुर्य का नाश हो जता है। – गोस्वामी तुलसीदास

अदालत के समरूप वैधानिक मान्यता प्रदान करें ताकि खाप पंचायतें छोटे–मोटे झगड़ों व विवादों का समाधान स्थानीय स्तर पर कर सकें तथा आम ग्रामीण व्यक्ति को सस्ता, शीघ्र तथा आपसी सहमती से न्याय प्राप्त हो सके।

जाट महापुरुषों की जीवनी को पाठ्यक्रम में शामिल करना : महाराजा सूरजमल, राजा नाहर सिंह, शहीद भगत सिंह, सर छोटूराम, चौ. चरण सिंह जैसे असंख्य महापुरुष जाट समाज में पैदा हुए हैं। जिन्होंने अपनी वीरता, विवेकपूर्ण तथा जनहितैषी कार्यों से भारत का मान बढ़ाया था। परंतु इन महापुरुषों की जीवनी तथा कार्यों को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में सही तथा पूर्ण रूप से शामिल नहीं किया गया है। जिसके कारण जाट समाज के महापुरुषों को वह सम्मान प्राप्त नहीं हो पाया है, जिसके वह अधिकारी हैं। इसलिए केंद्र व राज्य सरकारों को चाहिए कि वे जाट महापुरुषों की जीवनी को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में अवश्य शामिल करें।

गैर जाट शब्द पर प्रतिबंध लगाना : भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है तथा यहां पर विभिन्न धर्मों व जातियों के व्यक्ति रहते हैं। उनमें से उत्तर भारत की एक महत्वपूर्ण जाट जाति भी है जोकि अपने सरल व सीधे स्वभाव, व्यवहार तथा भाषा के लिए जानी जाती है। पिछले कुछ वर्षों से जाट विरोधी मानसिकता रखने वाले मीडियाकर्मी सुनियोजित षड़यंत्र के तहत जाटों को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं जिसके अंतर्गत वे जाट तथा गैर जाट शब्दों का प्रयोग करके समाज में जातिय जहर फैलाने का कार्य कर रहे हैं। ये मीडिया कर्मी जाट बनाम गैर जाट शब्दों के माध्यम से अन्य जातियों के मन में जाटों के प्रति घृणा पैदा कर रहे हैं, जिसके परिणाम भविष्य में काफी खतरनाक हो सकते हैं। भारत में रहने वाली बहुत सी जातियां जैसे ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, कुम्हार, खत्री, अहिर आदि की तरह जाट भी एक जाति है। इसलिए जाटों के लिए जाट शब्द का प्रयोग न्यायसंगत है परंतु गैर जाट ना तो कोई जाति है ना तो कोई धर्म है इसलिए गैर जाट शब्द के प्रयोग का मूल उद्देश्य अन्य जातियों को जाटों से लड़ाना है जो कि समाज तथा देश हित में कतई नहीं है। इसलिए केंद्र तथा राज्य सरकारों को चाहिए कि वह 'गैरजाट' शब्द के प्रयोग पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगाएं।

चौ. चरण सिंह व शहीद भगत सिंह को भारत रत्न : भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार द्वारा करीब 45 महान हस्तियों को सर्वोच्च नागरिक सम्मान **'भारत रत्न'** से अलंकृत किया जा चुका है। परंतु भारत सरकार द्वारा अभी तक 'भारत रत्न' का सम्मान किसी भी जाट हस्ती को प्रदान नहीं किया गया है। ऐसा नहीं है कि जाट समाज का कोई महानुभाव इस सम्मान का अधिकारी नहीं था बल्कि जाट समाज में पैदा हुए महाराजा सूरजमल, राजा नाहर सिंह, चौ. चरण सिंह, सर छोटूराम, चौ. देवी लाल, शहीद भगत सिंह तथा पहलवान सुशील कुमार जैसे बहुत से महानुभाव हुए हैं जोकि 'भारत रत्न' सम्मान पाने के अधिकारी हैं। इसलिए भारत सरकार को चाहिए कि वह चौ. चरण सिंह भूतपूर्व प्रधानमंत्री तथा शहीद भगत सिंह को उनके विशिष्ट कार्यों के लिए जाटों की भावनाओं के अनुरूप अतिशीघ्र 'भारत रत्न' सम्मान से अलंकृत करें।

सर छोटूराम के जन्मदिवस पर राष्ट्रीय अवकाश : सर छोटूराम जाट समाज में उत्पन्न हुए बड़े किसान हितैषी राजनेता हुए हैं। इन्होंने किसानों के दर्द को समझते हुए अपने जीवन में किसानों की हालत सुधारने के लिए बहुत से कार्य करते हुए अनेक किसान हितैषी कानून लागू करवाए थे। उनके प्रयासों से ही किसान अपनी जमीनों के वास्तविक मालिक बन पाए थे। सर छोटू राम के लिए समस्त किसान वर्ग के दिल में बहुत ही सम्मान है, इसलिए किसानों की भावनाओं का सम्मान करते हुए केंद्र सरकार सर छोटू राम के जन्मदिवस को राष्ट्रीय अवकाश घोषित करे।

इस प्रकार जाट समाज के मान सम्मान तथा विकास के लिए हमारे विभिन्न जाट संगठनों को सरकार पर दबाव बनाने के लिए रणनीति बनाकर संयुक्त रूप से संघर्ष करने की आवश्यकता है ताकि सरकार जाटों की उपरोक्त मांगों को पूर्ण करने के लिए कानून बनाने के लिए बाध्य हो तथा जाटों को ससम्मान उनका हक प्राप्त हो जाए। इसके अतिरिक्त जाटों को जाट समाज के विकास के लिए अपने स्तर पर भी कुछ फैसले लेने की आवश्यकता है, जिसके फलस्वरूप जाटों को अपना विकास करने के लिए किसी पर निर्भर रहने की आवश्यकता ना पड़े। इसके लिए जाट समाज द्वारा अपने स्तर पर किये जाने वाले कुछ प्रमुख कार्य निम्न प्रकार से हैं:–

1. जाट एकता समय की आवश्यकता : जाटों की सबसे बड़ी कमजोरी आपस में एकता ना होने है। वर्तमान समय में अपने हक प्राप्त करने तथा उसके लिए प्रभावी रूप से संघर्ष करने के लिए जाट एकता समय की आवश्यकता है। परंतु आज जाटों में एकता की सख्त कमी है। जिसके कारण जाट विभिन्न गोत्रों, खापों, भाषाओं, क्षेत्रों, जाट संगठनों तथा राजनीतिक दलों में अलग–अलग रूप से विभाजित हैं। जाटों का अहंकार तथा चौधराहट की भावना जाट एकता में सबसे बड़ी रूकावट बनी हुई है। जाटों में एकता की कमी के कारण ही जाट आरक्षण का लाभ जाट समाज को बहुत समय व संघर्ष के पश्चात प्राप्त हुआ है तथा जाटों के अलग–अलग से बंटे होने के कारण ही विभिन्न राजनीतिक दल जाटों की भावनाओं तथा मांगों को नजरअंदाज कर देते हैं। जिसके कारण जाटों को अपने हकों से वंचित रहना पड़ता है। समय की आवश्यकता को समझते हुए जाटों को सामाजिक, राजनीतिक तथा वैचारिक रूप से एक हो जाना चाहिये तथा अपने हक प्राप्ति के लिए संयुक्त योजनाबद्ध ढंग से संघर्ष करना चाहिये। जाटों में एकता लाने के लिए मेरी राय है कि सभी जाटों को वैदिक धर्म के झंडे तले आ जाना चाहिये। जिससे जाटों में वैचारिक एकता तुरंत तथा मजबूती से आयेगी।

2. मीडिया में भागीदारी बढ़ाना : भारत का जाट समाज अत्यन्त सीधा, सरल तथा मेहनती है। इस समाज की खाप प्रणाली जाट समाज को कुरीतियों से दूर रहने के लिए महत्वपूर्ण कार्य करती है। जाटों में शिक्षा का स्तर लगातार बढ़ रहा है। परंतु मीडिया में जाटों की भागीदारी नगण्य ही है। जिसके कारण जाटों का पक्ष मीडिया द्वारा पूर्णतया सही ढंग से प्रस्तुत नहीं किया जाता है। जाट विरोधी मानसिकता रखने वाला मीडिया के एक वर्ग विशेष द्वारा जाटों की छवि समाज के सामने गलत रूप से प्रस्तुत की जाती है। जिससे वर्षों से लोग जाटों को रूढ़ीवादी, गवार, झगड़ालू तथा दबंगों के रूप में समझते हैं, जिससे जाटों की सभ्य तथा विकासशील छवि प्रभावित होती है। मीडिया द्वारा जाटों की खाप पंचायतों को नकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है तथा इन्हें रूढ़िवादी तथा तालिबानी विचारधारा के संगठन बताया जाता है। जबकि वास्तविकता इसके विपरित है। मीडिया में जाटों का प्रतिनिधित्व कम होने के कारण खापों तथा जाटों

पुरूषार्थ उसी में है, जो संकट की घड़ी में निर्णय लेने में कोई संकोच नहीं करता। – वेदव्यास

की सकारात्मक छवि लोगों के सामने नहीं आ पाती है, जिसका नुकसान जाट समाज को सामाजिक तथा राजनीतिक रूप से उठाना पड़ता है। इस संबंध में शिक्षित जाट नवयुवकों को चाहिये कि वह मीडिया में अधिक–से–अधिक भागीदारी बनाये ताकि जाटों की सकारात्मक छवि तथा जाट समाज का पक्ष ईमानदारी से समाज के सामने आ सके।

3. उच्च तथा तकनीकी शिक्षा : वर्तमान समय में शिक्षा तथा ज्ञान सफलता प्राप्त करने के महत्वपूर्ण सूत्र हैं। पिछले कुछ समय से जाट समाज के मेधावी छात्रों ने अच्छी सफलता प्राप्त करके जाट समाज का मान सम्मान बढ़ाया है, परंतु अन्य जातियों के मुकाबले में जाट अभी भी शैक्षिक रूप से पूर्ण समर्थवान नहीं बन पाये हैं। इसलिए सभी जाट परिवारों को चाहिये कि वह अपने बच्चों को उच्च तथा तकनीकी शिक्षा दिलवाने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दें ताकि बच्चे अच्छी तथा गुणवतापूर्ण शिक्षा प्राप्त करके अपने परिवार तथा जाट समाज को विकास के शिखर पर पहुंचा सकें। जाट बच्चों को भी चाहिये कि वह अपने माता–पिता की मेहनत की कमाई तथा जीवन को सार्थक बनाने के लिए कड़ी मेहनत करके शिक्षित बनें तथा अपने परिवार व जाट समाज का मान सम्मान बढ़ाते हुए देश के विकास की बुनियाद बनें।

4. तकनीकी रोजगार अपनाना : जाट समाज मुख्य रूप से कृषि कार्य या नौकरी (सरकारी व गैरसरकारी) पर ही आधारित हैं तथा तकनीकी रोजगार के कार्यों से दूर है। कृषि व नौकरी करके परिवार का पेट तो भरा जा सकता है परंतु आत्मनिर्भर नहीं बना जा सकता आत्मनिर्भर बनने के लिए तकनीकी रोजगार बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। कई जातियों ने तकनीकी रोजगार के माध्यम से बहुत सफलता प्राप्त की है तथा उन्हें दूसरों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। परंतु जाटों में तकनीकी ज्ञान तथा इच्छाशक्ति की कमी है। जिसके कारण जाटों में तकनीकी रोजगार के कार्यों में सफलता बहुत कम है। इस संबंध में जाट युवकों को चाहिए कि वह तकनीकी तथा व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करके तकनीकी रोजगार को प्रमुखता से अपनायें ताकि जाटों को अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें।

5. व्यापारिक कार्यों में दिलचस्पी लेना : आर्थिक सफलता प्राप्त करने के लिए व्यापारिक बुद्धि तथा व्यापारिक कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण तथा शीघ्र आर्थिक समृद्धि का साधन हैं। परंतु जाट समाज का यह दुर्भाग्य है कि व्यापार में कुछ अपवादों को छोड़कर जाटों की सफलता ना के बराबर है, व्यापार का कार्य करने के लिए तेज बुद्धि, व्यवहार कुशलता, भाषा का लचीलापन तथा व्यापार नीति की आवश्यकता होती है। परंतु अधिकांश जाटों को इन सभी से एलर्जी है, जिसके कारण जाट व्यापार में कामयाब नहीं हो पाते हैं तथा मेहनती होने के पश्चात भी आर्थिक समृद्धि प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इसलिए समस्त जाट परिवारों को चाहिए कि वे आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए व्यापारिक सोच व नीति को अपनायें तथा आर्थिक सफलता प्राप्त करें। जाटों को इस कड़वी सच्चाई को याद रखना चाहिये कि पेट बातों से नहीं भोजन से भरता है।

6. कन्याओं को उच्च शिक्षा दिलवाना : जाट समाज कन्याओं को शिक्षा दिलवाने में अभी भी काफी पीछे हैं। सभी जाट परिवारों को चाहिये कि वह अपनी कन्याओं को उच्च शिक्षा दिलवाने का प्रयत्न करें तथा बेटा, बेटी में कोई भेदभाव ना करें। एक शिक्षित कन्या अपने परिवार को अच्छे ढंग से शिक्षा देकर उसका विकास कर सकती है तथा विवाह उपरांत अपने बच्चों को शिक्षित, मेहनती तथा संस्कारी बना सकती है। इसलिए सभी जाटों को अपनी कन्याओं को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए भरसक प्रयास तथा दृढ़ निश्चय करना चाहिये। जाट समाज की महिलायें तथा कन्याएं मेहनत करने में सबसे आगे हैं। यदि उन्हें शिक्षा रूपी उच्च ज्ञान प्राप्त हो जाये तो वे जाट समाज के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग दे सकती हैं।

7. नशे तथा अहंकार का त्याग करना : जाटों में एक बहुत बड़ी बुराई नशे के सेवन करने की आ चुकी है। जिसके कारण जाट अपना धन, समय तथा शक्ति नशे के सेवन व नशे से उत्पन्न लड़ाई झगड़ों पर खर्च कर रहे हैं। जिसके कारण उनका आर्थिक तथा सामाजिक विकास प्रभावित हो रहा है। जाटों की एक और समस्या अधिकांश जाटों में अहंकार की भावना का भी होना है। जिसके कारण जाट अन्य जातियों के साथ समन्वय नहीं बिठा पाते हैं। जिसका नुकसान जाटों को प्रत्येक क्षेत्र में उठाना पड़ता है। नशे के सेवन के उपरांत तो अहंकार अत्यधिक बढ़ जाता है जोकि जाट समाज के समग्र विकास में बहुत बड़ी बाधा है। अतएव यदि जाटों को सही रूप से विकास करना है तो उन्हें अविलंब नशे तथा अहंकार का त्याग कर देना चाहिये।

8. जाट समाज के बच्चों को मार्गदर्शन तथा कोचिंग दिलवाना : केंद्र तथा बहुत से राज्यों में जाटों के लिए आरक्षण लागू हो चुका है। परंतु इस आरक्षण का वास्तविक लाभ तभी प्राप्त होगा जब जाट समाज के बच्चों को सही मार्गदर्शन तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छी कोचिंग प्राप्त होगी। जिस प्रकार जाट समाज के कल्याण के लिए कार्य करने वाले विभिन्न जाट संगठनों ने जाट आरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उसी प्रकार जाट संगठनों तथा संस्थाओं को चाहिए कि वह विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जाट समाज के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए सही मार्गदर्शन उपलब्ध करवाने तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए उच्च तथा अच्छी कोचिंग दिलवाने में महत्वपूर्ण योगदान दें। जाट समाज के धनवान तथा सम्पन्न वर्ग को भी इसमें आर्थिक योगदान देना चाहिये।

9. सामाजिक चिंतन व मंथन करना : वर्तमान समय में धन प्राप्ति की अंधी दौड़ के कारण सामाजिक परिवेश लगातार बदल रहा है तथा जाट समाज भी इससे लगातार प्रभावित हो रहा है। सामाजिक उत्सवों, रिश्तों, रीति रिवाजों तथा परंपराओं पर पैसा हावी होता जा रहा है। जिसके कारण सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है तथा सामाजिक कुरीतियां लगातार बढ़ रही हैं। समाज नैतिक पतन की तरफ अग्रसर हो रहा है। जाट नवयुवक नशे का शिकार होकर पथ भ्रष्ट हो रहे हैं जोकि हमारी भावी पीढ़ी के विकास के लिए खतरनाक संकेत है। इसलिए यह आवश्यक है कि जाट समाज कुछ समय निकालकर यह चिंतन तथा मंथन अवश्य करें कि वर्तमान समय में वह अपनी संस्कृति, मान मर्यादा, रीतिरिवाजों तथा नैतिक चरित्र की रक्षा करते हुए विकास के मार्ग पर कैसे अग्रसर हों क्योंकि आज ईमानदारी तथा मेहनत को अपनाकर भ्रष्ट आचरण से दूर रहकर विकास प्राप्त करना आसान नहीं है। इस संबंध में जाट समाज को चाहिए कि वह वर्तमान परिवेश में चिंतन करके समस्त सामाजिक कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, धन का दिखावा, नशे का सेवन, अहंकार तथा भ्रष्टाचार का त्याग शीघ्र करें तथा अन्य जातियों में पाई जाने वाले गुणों जैसे मेहनत, व्यवहार कुशलता, मधुर भाषा आदि गुणों को ग्रहण करने में कोई शर्म या झिझक महसूस ना करें।

दुर्भाग्य में कोई किसी का साथी नहीं होता। देखिए, मरते समय मनुष्य की आंख भी फिर जाती है। – अज्ञात

ाहीद-ए-आजम भगत सिंह का आश्रयस्थल

&ikpk;! nonÙk 'kkL=h fdjrku ¼fglkj½

आर्य समाज कलकत्ता की भूमि स्वदेशी आंदोलन की भूमि रही है। यहां लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्रपाल यानि सभी लाल, बाल, पाल जैसे देशभक्त क्रांतिकारी राष्ट्र नेताओं के व्याख्यान हो चुके थे। यह मंदिर निर्माण से पहले का इतिहास है। इसी मैदान में जहां आर्य समाज कलकत्ता का मंदिर बना, स्वदेशी राखी बंधन हुआ था। इसी मैदान में विलायती वस्त्रों की होली जली थी। इस मैदान में बात की बात में पुलिस लाठी चार्ज कर देती थी। यह मैदान आर्य समाज मंदिर के निर्माण से पूर्व क्रांति का मैदान और क्रांतिकारियों का कार्य स्थल था। केवल कलकत्ता ही नहीं, संपूर्ण भारत में आर्य समाज स्वतंत्रता, स्वदेशी प्रियता और जागरण का शंखनाद कर रहा था। भारत की अंग्रेज सरकार को आर्य समाज और आर्य समाजियों पर बहुत संदेह हो गया था। आर्य समाज कलकत्ता और यहां के सदस्य भी स्वदेश प्रियता में कहीं से कम न थे। इसका एक बड़ा आकर्षक इतिहास यह है कि अमर शहीद भगत सिंह आर्य समाज कलकत्ता में दो बार आकर ठहरे थे। प्रथम बार सांडर्स वध से पूर्व भगत सिंह कुछ केमिकल्स खरीदने के विचार से कलकत्ता आये थे। सांडर्स का वध 17 दिसंबर 1928 की घटना है। उस समय कलकत्ता यात्रा में श्री कमलनाथ तिवारी, जो पीछे सांसद भी बने, उनके साथ इस खरीददारी में थे। श्री कमलनाथ तिवारी के शब्दों में एक संस्मरण वीरेंद्र सिंह एम.ए. ने 'युगद्रष्टा भगत सिंह और उनके मृत्युंजय पुरखे' नामक ग्रंथ में दिया है। सांडर्स हत्या कांड से कुछ दिन पहले भगत सिंह देशी बम बनाने के लिए कुछ आवश्यक केमिकल्स खरीदने के उद्देश्य से कलकत्ता आये थे। उनका बाजार में जाना संदेहास्पद हो सकता था। वह बहुत सी दुकानों पर गये। अधिकतर दुकानदारों ने सरकारी प्रतिबंध के कारण केमिकल्स देने से इंकार कर दिया। बाद में क्रांतिकारी दल से सहानुभूति रखने वाले दुकानदारों के यहां वह भाई बैजनाथ सिंह 'विनोद' के साथ गया। उनसे आवश्यक केमिकल्स मिल गये। उनमें बीपाल का नाम अब भी याद है। उनके केमिकल्स को एक मुटिया मजदूर के सिर पर रखवा दिया। हम दोनों आर्य समाज मंदिर लौट रहे थे कि मुटिया की टोकरी उसके सिर से गिरने को हुई। हमने उसको ऐसे डांट लगानी शुरू कर दी जैसे हमारा उससे कोई संबंध ही न हो। बात यह थी कि सामने ही एक सर्जेंट खड़ा था, हमें भय हुआ कि यदि कहीं उसको केमिकल्स के बारे में संदेह हो गया तो हम उसके चुंगल से बच नहीं सकेंगे। हमारी डांट डपट काम आ गई। मुटिया संभल कर आगे बढ़ गया और सार्जेंट का ध्यान उसकी ओर से हट कर हम पर लग गया। उसने हमको समझाया कि उस मामूली सी बात पर गरीब मुटिया को डांटने की क्या जरूरत थी। थोड़ी दूर जाकर सामान रिक्शा पर रख दिया और हम दोनों सकुशल सामान के साथ आर्य समाज पहुंच गये। दूसरे दिन भगत सिंह फणींद्रनाथ घोष और यतींद्रनाथ दास तीनों ने मिलकर सवेरे ही देशी बम में काम आने वाली देशी गन काटन तैयार की। शेष केमिकल्स और गन काटन लेकर भगत सिंह आगरा के लिए रवाना हो गया। इतना बड़ा उदाहरण हमने इसलिए दिया कि जन श्रुतियों में यह बात तो है कि सरदार भगत सिंह एसेंबली बम कांड से पूर्व दुर्गा भाभी के साथ, कलकत्ता आये थे और आर्य समाज मंदिर में रहे भी थे, किंतु सांडर्स वध से पूर्व केमिकल्स खरीदने के उद्देश्य से कलकत्ता आने पर भी भगत सिंह आर्य समाज मंदिर में आये थे। यह बात कलकत्ता के लोग भी कम जानते हैं। इस उदाहरण से एक और बात समझ में आती है कि आर्य समाज क्रांतिकारियों का केंद्र था। इस वेद मंदिर में क्रांतिकारी न केवल निवास की दृष्टि से अपने को सुरक्षित समझते थे, अपितु कई–कई क्रांतिकारी एक साथ इकट्ठे होकर क्रांति के कुछ कार्यों की योजना कार्यान्वित करते थे। गन काटन बनाने की बात तो ऊपर दिये उदाहरण में ही है। क्रांतिकारियों के इस केंद्र में और भी बहुत कुछ होता रहा होगा, क्योंकि इस आर्य समाज के ट्रस्टियों में निर्माण कर्ताओं व प्रबंधकों में हरियाणा के पटसन के व्यापारी दानवीर सेठ चौ. छाजूराम जी का स्थान महत्वपूर्ण था। वे आर्य समाज कलकत्ता के कोषाध्यक्ष थे। उनका अंगरक्षक /बॉडी गार्ड चौ. बलबीर सिंह सिंधु एक उद्योगपति के परिवार से था और भगत सिंह का फरारी हालत में खांडा गांव में आना जाना रहा था। भगत सिंह भी सिंधु जाट सिक्ख था। ऐसा मुझे स्व. मित्र सेन जी ने तब बताया था जब मैं उनका अभिनंदन ग्रंथ तैयार करने के लिए लगभग एक महीना रोहतक सेक्टर 14 में उनकी कोठी पर रहा था।

dydÙkk eas f}rh; izokl½

सरदार भगत सिंह दूसरी बार सांडर्स वध के पश्चात फरार होकर आये थे। वह इतिहास प्रसिद्ध घटना है। साइमन कमीशन का आगमन भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक मोड़ लाया। जहां–जहां भी साइमन कमीशन जाता, वहां–वहां 'साइमन कमिश्न वापस जाओ' के नारे लग जाते थे। साइमन कमिश्न को 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर पहुंचना था। एक दिन पहले मिस्टर ऐ.एस. स्कॉट लाहौर के सीनियर सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस ने आदेश जारी कर जनता को किसी प्रकार का जुलूस न निकालने की हिदायत दी। कमिश्न के आने से पहले ही लाहौर में उसका बहिष्कार करने के लिए कांग्रेस, नौजवान भारत सभा, छात्रसंघ और हिंदुस्तान सेवादल, क्रांतिकारी संगठन आदि अपना–अपना निश्चय कर चुके थे। आदेश का उल्लंघन करके 30 अक्टूबर 1928 को हजारों की संख्या में लोग लाहौर पहुंच गये और इस जुलूस का नेतृत्व पंजाब केसरी लाला लाजपतराय कर रहे थे। जब जुलूस पुलिस द्वारा की गई

नाकेबंदी के पास पहुंचा तो उस पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। मि. स्काट एसएसपी ने लाला लाजपतराय को अपनी जानलेवा लाठी के प्रहार का निशाना बनाया, परिणामस्वरूप वे घायल हो गये। उसका लाठी प्रहार में साथ दिया, उसी के एएसपी सांडर्स ने और लाला जी फिर भी डटे रहे। उसी दिन एक जनसभा में घायल अवस्था में बोलते हुए लाला जी ने कहा कि 'मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के शव की कील बनेगी। 20 दिनों बाद 17 नवंबर 1928 को पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का देहांत हो गया। क्रांतिकारी भगत सिंह व अन्य क्रांतिकारियों ने एक मत होकर मि. स्काट एसएसपी लाहौर की हत्या करके लाला जी की मौत का बदला लेने का दृढ़ संकल्प लिया। इस कार्य को अंजाम देने के लिए 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' के चार सदस्यों भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु और जयगोपाल को नियुक्त किया गया। संयोगवश 17 दिसंबर 1928 को मि. स्काट एसएसपी कार्यालय में नहीं थे और सरकारी दौरे पर कसूर चले गए थे। इसलिए मि. स्काट की बजाय मिस्टर जेपी सांडर्स एएसपी गलती से क्रांतिकारियों का निशाना बन गए। वैसे गलत कुछ नहीं हुआ, यह सांडर्स भी तो लाठी प्रहार व लाठी चार्ज में सहायक था। 17 दिसंबर को जब शाम चार बजे के आस–पास मिस्टर सांडर्स अपनी मोटरसाइकिल पर पुलिस कार्यालय से बाहर निकला तब हैड कांस्टेबल को भी गोलियों का शिकार बना दिया गया तथा क्रांतिकारी डीएवी कालेज के भवन अथवा भोजनालय में जाकर छुप गये। अगले दिन लाहौर में सब जगह पोस्टर चिपके हुए थे जिनमें लिखा था 'सांडर्स की हत्या से लाला लाजपतराय की हत्या का बदला ले लिया गया।' 20 दिसंबर 1928 की रात के 10 बजे के आस–पास सुखदेव दो और साथियों के साथ दुर्गा भाभी के निवास पर पहुंचे। उन दोनों में एक लंबा युवक था, जिसने यूरोपियन पोशाक पहनी हुई थी और दूसरा उसका नौकर जिसने बहुत मामूली कपड़े पहने हुए थे। कुछ मिनटों के बाद सुखदेव अपने आप पर काबू न पा सके और हंसकर बोले यह जो गेहुंए रंग का साहब है, वह और कोई नहीं, देहाती जाट भगत सिंह है। अब सबको यह पक्का विश्वास हो गया कि अगर दुर्गा भाभी, भगत सिंह को नहीं पहचान सकी तो वह बिना किसी डर के लाहौर से बाहर की यात्रा कर सकते हैं। अब भगत सिंह, दुर्गा भाभी और उनके ढाई वर्ष के बेटे शचींद्र के साथ 21 दिसंबर 1928 को सुबह रेलगाड़ी द्वारा कलकत्ता के लिए रवाना हो गये। राजगुरू रास्ते में उतर गये और चंद्रशेखर आजाद भी कुछ दिन बाद इसी प्रकार से लाहौर से प्रस्थान कर गये। इस बीच क्रांतिकारी दल की एक सदस्या सुशीला दीदी के पास तार भेज दिया गया, जो कलकत्ता में सेठ चौ. छोटूराम के बच्चों को पढ़ाती थी। जालंधर के आर्य समाज के मंत्री व स्वामी श्रद्धानंद के साले आर्य कन्या महाविद्यालय जालंधर के संचालक संस्थापक स्थापना सन 1886 से सेठ छाजूराम ने सुशीला दीदी को अपने परिवार के बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष प्रार्थना करके मांगा था। उस समय दुर्गा भाभी अपने पुत्र शचींद्र को लेकर भगत सिंह के साथ दिखाने के लिए उनकी पत्नी का रूप धारण किए हुए कलकत्ता स्टेशन पर उतरी थी। पुलिस भगत सिंह को अविवाहित सिख नौजवान के रूप में पहचानती थी। पुत्र सहित दुर्गा भाभी जब उनके साथ से लंग गई तो पुलिस की निगाहें यह दूर की भी संभावना न कर सकती थी कि यह नौजवान भगत सिंह हो सकता था। सुशीला दीदी ने सेठ छाजूराम की पत्नी लक्ष्मी देवी से बातें की और भगत सिंह तथा दुर्गा भाभी को सर छाजूराम की कोठी में अतिथि के रूप में ले आई। 'युग द्रष्टा भगत सिंह' नाम ग्रंथ में इस प्रसंग को इस प्रकार लिखा है 'भगत सिंह और दुर्गा भाभी एक दिन होटल में रहे। दूसरे दिन छाजूराम की कोठी में चले गए और एक सप्ताह से अधिक वहीं रहे। भगत सिंह को वहां रखने और निश्चित रहने की स्वीकृति सर सेठ की पत्नी लक्ष्मी देवी ने ही सुशीला दीदी को दी थी। उनको ऊपर की मंजिल में ठहराया गया था और भोजन इत्यादि की व्यवस्था स्वयं लक्ष्मी देवी ही करती थीं। उन दो के अतिरिक्त भगत सिंह का सही परिचय किसी को भी न था। यह इतिहास का चरित्र है कि उसने एक सप्ताह के अतियय के बदले में माता लक्ष्मी देवी और उनके पति सर सेठ छाजूराम को सदा के लिए अपना अतिथि बना लिया। आगे इतिहास इतना ही बताता है कि सर छाजूराम की कोठी में एक सप्ताह रहने के बाद सरदार भगत सिंह को और अधिक सुरक्षित स्थान में स्थानांतरित कर दिया गया। भगत सिंह कलकत्ता में हरि नाम से अपना परिचय देते थे। भगत सिंह और दूसरे साथियों के लिए बाद में दूसरे सुरक्षित मकान का प्रबंध हो गया और वे सेठ की कोठी से वहां बदल दिये गये। कुछ दिन वे उसमें रहे और फिर आगरा चले गए। इस छोटे से उदाहरण से एक बात यह स्पष्ट हो जाती है कि कलकत्ता आकर भगत सिंह क्रांतिकारी साथियों के संपर्क में आये। एक अतिथि जो सेठ छाजूराम की कोठी में अतिथि बनकर रह सकता था किंतु यह सेठ की कोठी क्रांतिकारियों का अड्डा तो नहीं बन सकती थी। इसके लिए तो कोई सार्वजनिक स्थान ही उपयुक्त हो सकता था। सार्वजनिक स्थान क्रांतिकारियों का केंद्र आर्य समाज मंदिर ही था। आर्य समाज मंदिर की छत पर ट्राम रास्ते की ओर उत्तर दक्षिण दोनों कोनों पर गुबंदनुमा दो कोठरियां थी। इन्हीं दोनों में से एक कोठरी में भगत सिंह रहते थे। छत की कोठरी होने के कारण इनमें सुरक्षित होने का आश्वासन भी अधिक था। सरदार भगत सिंह का फ्लैट हैट वाला प्रसिद्ध जनप्रिय चित्र यहीं कलकत्ता का है। इसी रूप में हरि नाम से वे यहां रहते थे। यहां से जाते समय आगे के निर्णायक कदम लगभग तय थे। असेंबली बम कांड की मानसिक तैयारी भगत सिंह के मस्तिष्क में पूर्ण हो चुकी थी। अतः वे जब कलकत्ता से चले तो सुशीला दीदी ने तो उन्हें अपने रक्त से टीका किया था और आर्य समाज मंदिर की छत की कोठरी ने एक बलिदानी वीर को जीवन के अंतिम किंतु अद्भुत कार्य के लिए मौन विदा दी थी। भगत सिंह भी इस यात्रा के गौरव को समझते थे और परवर्ती घटनाओं के लिए सजग थे।'

cfu;knh <kpk dk fodkl

मौजूदा परिदृश्य में ग्रामीण और कृषि क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या जनसंख्या का अधिक भार है। बार–बार बंटवारा होने के कारण अब 80 फीसदी जोत का व्यवसाय घाटे का सौदा साबित हो रहा है। नौकरी की तलाश में बड़ी संख्या में ग्रामीण शहरों की और रूख कर रहे हैं। इस समस्या के समाधान के लिए ग्रामीण क्षेत्रों का विकास, उनमें मकैनीक और व्यावसायिक शिक्षा की सुविधाओं का विस्तार और सड़क, बिजली तथा स्वास्थ्य सेवाएं शहरी क्षेत्रों के समान उपलब्ध करानी होंगी। इन इलाकों में पहाड़ी राज्यों की तरह कारखाने लगाने के लिए उद्यमियों को प्रोत्साहित करना होगा। यहां रोजगार के साधन विकसित होने पर ग्रामीणों का शहरों की ओर हो रहा पलायन निश्चित तौर पर रूक जाएगा।

fdlkuk dh vkfFkd lq/kkj

किसानों की माली हालत में सुधार के लिए सरकार को एक ठोस नीति बनानी होगी जिसमें फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य और मंडी व्यवस्था में आमूलचूल सुधार करना होगा। किसानों की आय में इजाफा करने के लिए कृषि लागत और मूल्य प्रणाली में संतुलन बनाना होगा। किसानों को खुदकुशी से बचाने के लिए उन्हें सस्ती दरों पर/पर्याप्त और जरूरत के अनुसार कर्ज मुहैया कराना होगा। यदि सरकार इस दिशा में ईमानदारी से काम करे तो खेती और किसानों को संकट से उबारा जा सकता है। किसानों की कर्जमाफी किसी समस्या का समाधान नहीं है। इस योजना से जो किसान समय पर कर्ज अदायगी करते हैं वे अपने आपको ठगा सा महसूस करते हैं। सरकार इस योजना को लागू करके सस्ती लोकप्रियता हासिल करने की कोशिश करती है। हमें किसानों को याचक नहीं बल्कि आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत है। इससे किसानों और अर्थव्यवस्था दोनों का ही कल्याण होगा।

Ñf"k mRikndrk c<kuk t:jh

भारत की दो–तिहाही जनसंख्या अभी भी आजीविका के लिए कृषि पर आश्रित है। हालांकि देश के सकल घरेलू उत्पाद में इस क्षेत्र का योगदान मात्र 15 प्रतिशत ही है। स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र को अपनी क्षमता से ज्यादा लोगों को संबल देना पड़ रहा है। यही कारण है जो पिछले एक दशक में 90 लाख से ज्यादा लोगों ने खेतीबाड़ी छोड़ दी। इस दौरान भूमिहीन श्रमिकों की संख्या में भी 36 प्रतिशत इजाफा हो गया है। इसके बावजूद कृषि देश के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के मद्देनजर महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। हालांकि हालिया वर्षों में खाद्य पदार्थों के उत्पादन ने नई ऊंचाईयां छूली हैं, तो भी उत्पादकता में तेजी से बढोत्तरी जरूरी है। तभी भविष्य की खाद्य जरूरतों को पूरा किया जा सकेगा।

tk igy dh tkuh pkfg;

- खाद्यानों, सब्जियों और अन्य नकदी फसलों की उत्पादकता (उपज) बढाई जानी चाहिये जो अभी भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर से पीछे हैं। इसके लिए सिंचाई के साधनों में खासी वृद्धि करके वर्षा पर निर्भरता को कम किया जाना चाहिये। बेहतर बीज और अन्य आदान किसानों को मुहैया कराए जाने चाहिये। भूमि की उर्वरता बनाए रखने के प्रयास होने चाहिये। स्थानीय प्रजातियां उगाने को तरजीह मिलनी चाहिए।
- किसानों को नई तकनीक की जानकारी देने और आधुनिक आदान मुहैया कराने के लिए कृषि–विस्तार सेवाओं को मजबूत किया जाना चाहिये। नरेंन्द्र मोदी ने गुजरात में इन आवश्यक बातों में से कुछ को आजमाया था। नतीजे अच्छे रहे।
- कृषि बाजार विकसित किया जाए। इन तक छोटे किसानों की पहुंच सुनिश्चित की जाए। साथ ही परिवहन, भंडारण, गोदामों और अवशीतन गृहों की सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए। किसानों को लाभकारी मुल्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए। कृषि श्रामिकों को भी वाजिब मजदूरी मिलनी चाहिए।
- भूमि सुधार कार्यक्रम क्रियान्वित किया जाना चाहिए ताकि छोटे जोतदारों और भूमिहीनों की क्षमता का और भूमिहीनों की क्षमता का अच्छे से इस्तेमाल हो सके। गौरतलब है कि कृषि भूमि का 67 फीसदी हिस्सा छोटे, सीमांत और मध्यवर्गीय किसानों के पास है, जिनके पास चार हैक्टेयर से कम कृषि भूमि है। वर्ष 2011 में भारत में भूमिहीन श्रामिकों की संख्या 8.6 करोड़ थी। भूमि सुधार कार्यक्रम को सिरे चढ़ा कर जनसंख्या के इसी हिस्से को लाभाविन्त किया जा सकता है।

———————————————————

We Are Proud of

We salute the great Warrior of 1965 & 1971 Indo-Pak Wars, two times Mahavir Chakra and a young Warrior of 94 year Brig. Sant Singh. The Jat Sabha Chandigarh/Panchkula will always continue to pray for his longevity of life and good health.

जाट महासभा के विषय में रहबरे आजम दीनबन्धु सर छोटूराम के विचार

''जाट सभा को किसी में पुरखाश नहीं, वैर विरोध नहीं, नफरत नहीं। हम तो सबसे मेल मिलाप करने और साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाने वाले हैं। हम वेद, महर्षि दयानन्द, सिख पंथ, गुरूनानक, इस्लाम और पैगम्बर मौहम्मद के खिलाफ नहीं हैं। हम तो सब धर्मों में और उनकी बानियों और धार्मिक पुस्तकों का समान आदर करते हैं लेकिन हम किसी के खरीद गुलाम नहीं है।....... जो कौमें संयासी व आर्थिक लिहाज से हमारे हरे भरे खेतों को चरती आई हैं, वे अब न खेतों की रखवाली के इंतजाम से परेशान है। हमारा जवाब साफ है। हम किसी से लड़ने के इच्छुक नहीं। मजहबी मामलात से हमारा कोई सरोकार नहीं है। हम साम्प्रदायिक राजनीति से दूर हैं आपसी समझौते से किसी किस्म की लाभदायक सेवा करने का हमारा नेक मकसद है। हमारा प्रोग्राम 90 प्रतिशत आर्थिक, तालीम व सामाजिक व सांस्कृतिक है।''

bfrgkl dkjks }kjk

1- **Hkkjrh; jk"Vªifr tkfdj gqlSu us tkV lsUVj cjsyh esa Hkk"k.k fn;kA&** जाटों का इतिहास भारत का इतिहास है जाट रेजिमेण्ट का इतिहास भारतीय सेना का इतिहास है।

2- **fo[;kr i=dkj [kq'koUr flag us fy[kk gSA&** जाट जन्म से ही कर्मयोगी तथा लड़ाकू रहा है जो हल चलाते समय अपनी कमर से तलवार बांध कर रखता था। किसी भी अन्य क्षत्रिय से उसने मातृभूमि की ज्यादा रक्षा की है।

3- **Lokeh n;kuUn egkjkt %&** आर्यसमाज के संस्थापक ने जाट को 'जाट देवता' कहकर अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में सम्बोधन किया है। देवता का अर्थ है देने वाला।

4- **egkefge enu eksgu ekyoh; us dgkA&** जाट जाति हमारे राष्ट्र की रीढ़ है। भारत माता को इस वीर जाति से बड़ी आशाएं हैं। भारत का भविष्य जाट जाति पर निर्भर है।

5- **egku lezkV fldUnj %&** जब जाटों के बार–बार आक्रमणों से तंग आकर वापिस लौटने लगे तो कहा, ''इन खतरनाक जाटों से बचो''।

आर्य जीवन का आनन्द

jkds'k ljkgk

आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ जीवन शैली जीने वाला। वर्तमान समय में आधुनिकता के नाम पर हमारा समाज पाश्चात्य संस्कृति के अवगुणों को अपना कर अपनी जीवन शैली को निम्न बना रहा है तथा जीवन के नैतिक मूल्यों का ह्रास कर रहा है। हम भौतिकतावाद के युग में धन प्राप्ति की अन्धी दौड़ में शामिल होकर जीवन के वास्तविक आनन्द से दूर होते जा रहे हैं तथा अन्यायी बनते जा रहे हैं। जीवन वास्तविकता आनन्द अपने कर्मों से प्रत्येक प्राणी का कल्याण करने में है इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी तथा एक श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए आर्य समाज के 10 नियम बताये थे। इन नियमों का पालन करके प्रत्येक प्राणी आर्य (श्रेष्ठ) जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है। आर्य समाज के 10 नियम इस प्रकार है।

vk;Z lekt ds fu;e

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीति–पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए। किन्तु सब की उन्नति में उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व–हितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

भारत के सेना प्रमुखों के नाम तथा उनके कार्यकाल की अवधि

jkd'k l jkgk

Ø0 l0	lsuk çeq[k dk uke	dk;Zdky dh 'kq:vkr	dk;Zdky dh lekfIr
1.	जनरल मकडोनाल्ड लोखार्ट	15/08/1947	31/12/1047
2.	जनरल सर फरनकीस रोबर्ट	01/01/1948	15/01/1949
3.	फील्ड मार्शल के एम. करियप्पा	16/01/1949	14/01/1953
4.	जनरल महाराज राजेन्द्र सिंह जी	15/01/1953	14/5/1955
5.	जनरल एस.एम. श्रीनगेश	15/05/1955	07/05/1957
6.	जनरल के.एम. थिईमाया	08/05/1957	07/05/1961
7.	जनरल प्राणनाथ थापर	08/05/1961	19/11/1962
8.	जनरल जोयन्तोनाथ चौधरी	20/11/1962	07/06/1966
9.	जनरल पी.पी.कुमार मंगलम	08/06/1966	07/06/1969
10.	फील्ड मार्शल एस.एम. फ्रमाजी मानेकशा	08/06/1969	15/01/1973
11.	जनरल जी.जी.बी. मराठी	16/01/1973	31/05/1975
12.	जनरल तपेश्वर नाराश्ण रैना	01/06/1975	31/05/1978
13.	जनरल ओमप्रकाश मल्होत्रा	01/06/1978	31/05/1981
14.	जनरल के.वी. कृष्णा राव	01/06/1981	31/05/1981
15.	जनरल अरूण श्रीधर वैध	01/08/1983	31/01/1985
16.	जनरल के. सुन्दर जी	01/02/1985	31/05/1988
17.	जनरल विश्वानाथ शर्मा	01/06/1988	30/06/1990
18.	जनरल एस.एस. रोड्रीग्यूस	01/07/1990	30/06/1993
19.	जनरल विपिनचन्द्र जोशी	01/07/1993	19/11/1994
20.	जनरल शंकर राय चौधरी	20/11/1994	30/09/1997
21.	जनरल वेद प्रकाश मलिक	01/10/1997	30/09/2000
22.	जनरल एस. पदमानाथन	01/10/2000	30/12/2002
23.	जनरल निर्मलचन्द्र विज	31/12/2002	31/01/2005
24.	जनरल जोगिन्द्र जसवंत सिंह	31/01/2005	30/09/2007
25.	जनरल दीपक कपूर	30/09/2007	31/03/2010
26.	जनरल विजय कुमार	31/03/2010	31/05/2012
27.	जनरल विक्रम सिंह	31/05/2012	31/07/2014
28.	जनरल दलवीर सिंह सुहाग	31/07/2014	अब तक

जाट जाति के दो बड़े गुण

एक तो वह किसी एक सत्ता को देर तक सिर झुका कर नहीं मान सकते और दूसरा वह धार्मिक या मानसिक रूड़ियों की अत्यंत दासता से घबराते हैं। इन्ही गुणों का प्रभाव था कि यह सात सौ वर्षों तक मुसलमानों के शासन में रहे, परंतु प्रायः विरोधी बनकर ही। यह एक वीर जाति के लक्षण हैं। इन दो गुणों के साथ एक दोष भी लगा दिया है जो शायद उपर्युक्त गुणों का भाई है। जाट लोगों में एक खुरदरापन है, जो बिगड़ने पर परस्पर विरोध के रूप में परिणत हो जाता है। यदि यह एक दोष न होता तो दोनों के बल से जाट भारत के एक – छत्र राजा होते। जाट अपने में से ही किसी एक को ज्यादा लंबे समय तक राजा स्वीकार नहीं कर सकते। राजा के प्रति विद्रोह होना तय है। शायद इसी वजह से जाटों को मार्शल कौम कहा जाता है, लेकिन सबसे बड़ी कमी भी यही है कि जाट कभी ज्यादा लंबे समय तक एक छतरी के नीचे नहीं रह सकता।

List of Donations For Victims of Nepal Earthquake

Mr. Shameer S. Virak	2795, NSW, Kudworth Lane Sudbury, U.S. A.	51000.00
Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.)	# 222, Sector 36-A, Chandigarh.	11000.00
Sh. Yudhvir Singh Arya	# 291, Sector 15-A, Hisar	5100.00
Mrs. Jaiwanti Sheokand, IAS (Rtd.)	# 202, Urban Estate, Jind	5100.00
Sh. Satya Pal Malik	# 59, Gobind Vihar Baltana (Pb.)	5100.00
Col. O. P. Dahiya	# 261, Sector 35-A, Chandigarh.	5100.00
Sh. Bhisham Singh Bishraw President, Jat Sabha Nagpur	78, Maruti Nagar, Datawadi, Nagpur (T.N)	2500.00
Sh. B.S. Bill	# 43, Sector-12A, Panchkula	2100.00
Sh. R. K. Malik	# 969, Sector 26, Panchkula	2100.00
Sh. Naresh Dahiya	# 91, GH 3, MDS Sector 5 Panchkula	2100.00
Sh. Chander Bhan Pannu	# 1973, Sector 15, Panchkula	2100.00
Dr. V. P. Aahlawat	# 20, Sector 15-A, Hisar.	2100.00
Sh. Ram Chander Pannu	192/3, Gali No. 19, Shanti Nagar, Manimajra.	2100.00
Sh. Jasmer Singh	VPO: Bilas Pur, Distt. Yamuna Nagar.	1100.00
Sh. Raj Singh	101, Tribune Mittar Vihar, Sec 20, Pkl	1100.00
Sh. Hoshiar Singh Dhanda		1100.00
Sh. Ved Parkash Tomar	# 1098, Sector 23, Sonepat.	1100.00
Smt. Vet Wati	# 841, Sector 25, Panchkula.	1100.00
Sh. Surajmal Rathi	# 590, Sector 26, Panchkula.	1100.00
Sh. Karam Chand	# 1612, Urban Estate, Jind.	1100.00
Sh. Ram Dhari Solth	K-504, Vikram Vihar, AWHO, Sector 27, Panchkula	1100.00

List of New Life Members of Jat Sabha Chandigarh/Panchkula

(Enrolment Fee. Rs. 11000.00)

Sh. Azad Singh Lakra	C-4/125, Keshav Puram Delhi.
Sh. Vijay Khokhar	B-8. MG Road Adarsh Nagar, Delhi
Dr. Gajraj Singh Dahiya	10-A/7, New Campus, CCS HAU Hisar
Sh. Surender Hooda	Gali No. 19, Mayur Vihar Sonepat.
Sh. Anil Kumar Solth	K-504, Vikram Vihar, AWHO, Sec-27, Panchkula

List of Donors for Construction of Building

Sh. Tashbir Singh Ahlawat	# 270, Sector-25, Chandigarh	2100

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 13.09.1987) 27.6/5'5" M. Tech. Employed as Lecturer at Rohtak. Avoid Gotras: Nandal, Pawaria, Ahalawat. Cont.:09996060345, 09811658557
- SM4 Jat Girl (DOB 25.03.1990) 5'6" B.Sc. (Hons.) Math with Computer, M.Sc (Hons.) mathematics Punjab University Chandigarh, B.Ed, CTAT, HTAT Clear, working teacher in Bhavan Vidyalaya School sector-15 Panchkula. Avoid Gotras: Rathi, Mann, Dhanda. Cont.:9815253211
- SM4 Jat Girl 28/5'6" M.A Hons. B.Ed., Employed as Guest Lecturer in Govt. College, Panchkula. Family settled in Panchkula. Father working as Sub Divisional Engineer in HUDA. Brothers's own construction business. Avoid Gotras: Beniwal, Dabas, Sehrawat . Cont.: 09876944845, 09899294943
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.1991) 23.9/5'6" M.Tech. (CSE) Employed in a reputed University near Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 0172-2277177, 07696844991
- SM4 Jat Girl 25.10/5'5" B. Arch. Working at Panchkula. Avoid Gotras: Tomar, Gahlayan, Jatrana. Cont.: 07206603248.
- SM4 Jat Girl 25/5'6" M.C.A., B.Ed. Employed in M.N.C, Delhi. Avoid Gotras: Chhikara, Dalal, Tomar, Shokeen. Cont.: 09302951802, 09313433046
- SM4 Jat Girl, (DOB 12.05.1988) 27/5'2" M.Sc. (Microbiology) Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan. Cont.: 08146082832.
- SM4 convent educated Jat Boy 31/5'9" Post graduate from P.U. Protocol Officer in NABARD (Govt. of India Bank) Father retired Executive from PSU Bank and sister MBBS, MD doctor. Settled around Chandigarh. Avoid Gotras: Kundu, Gahlaut, Lohan. Cont.: 09888734404, 09466359345
- SM4 Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in Vipra Co. at Banglore. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal. Cont.: 09417629666
- SM4 Jat Boy 29/6' B. Tech from Kurukshetra University Employed as Soofware Engineer on contractual basis in Haryana Govt. at Chandigarh. Father Govt. Officer. Own House at Panchkula and have agriculture land. Preferred working match. Avoid Gotras: Sahu, Sindhu, Jakhar. Cont.: 09465227161, 09569802056

क्रमांक : जा0स0भ0-2015/अनुदान-41 दिनांक : 10/06/2015

विषय : मानव कल्याण के लिए विशेष अपील।

सादर प्रणाम,

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला (गैर राजनैतिक सामाजिक संस्था) मानव सेवा एवं समाज कल्याण के विभिन्न सामाजिक-कल्याणकारी कार्यक्रमों के आयोजन के लिए सदैव लग्नशील व तत्पर रहती है। इस संदर्भ में सभा की कार्यकारिणी द्वारा नेपाल, बिहार, उत्तर प्रदेश में आए भंयकर भूकंप के शिकार एवं पीड़ितों को आर्थिक सहायता प्रदान करने व इस त्रासदी से बेघर हुए असंख्य व्यक्तियों के पुनर्वास हेतू आर्थिक सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया गया है।

गत 7 जून 2015 को सभा के माननीय प्रधान का सभा के शिष्टमंडल सहित जस्टिस प्रीतमपाल, पूर्व न्यायधीश पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय व वर्तमान लोकायुक्त हरियाणा द्वारा आयोजित किए गए महायज्ञ के दौरान समारोह के मुख्य वक्ता, स्वंय सेवी-धार्मिक संस्था (वेद विद्या शोध संस्थान) पीपली जिला कुरूक्षेत्र के संचालक स्वामी संपूर्णानंद के साथ समाज सेवा/मानवसेवा पर विचार विमर्श हुआ। यह संस्था गरीब बच्चों व बेसहारा व्यक्तियों की आर्थिक मदद करने के इलावा नेपाल में भूकंप पीड़ितों के लिए न्यूनतम कीमत पर घर बनाने का कार्य कर रही है। यज्ञ समारोह के दौरान सभा के माननीय प्रधान द्वारा जाट सभा की ओर से भूकंप पीड़ितों के लिए पुनर्वास हेतू मकान बनाने के लिए 'वेद विद्या शोध संस्थान' को फौरी तौर से एक लाख रूपये का अनुदान देने के इलावा सुझाव दिया गया कि नेपाल में भूकंप पीड़ितों के लिए आवास बनाने का कार्य जारी रखा जाए और इसके लिए जाट सभा चंडीगढ़ अपना भरपूर आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेगी। अतः इस संस्था द्वारा नेपाल में बनाए जाने वाले मकानों पर जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला का नाम अंकित होगा जिससे सभा व समाज की नेपाल देश में भी पहचान बनेगी। **इसके साथ ही जाट सभा द्वारा समय-समय पर खेलों व शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये मेधावी छात्रों व उत्कृष्ट खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार दिया जाता है और हरियाणवी संस्कृति एवं भाषा के विस्तार के लिये भी विभिन्न कलाकारों व सार्वजनिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आर्थिक अनुदान भी दिया जाता है।**

इसलिए आपसे निवेदन है कि नेपाल भूकंप त्रासदी के पीड़ितों को आर्थिक सहायता प्रदान करने व इस प्रलय के कारण बेघर हुए असंख्य असहाय व्यक्तियों के पुनर्वास हेतू बढ़-चढ कर आर्थिक सहायता प्रदान करें। इस पुनित कार्य के लिए सभा के माननीय प्रधान द्वारा सर्वप्रथम 11 हजार रूपये का अनुदान दिया गया है। जाट सभा को अनुदान स्वरूप भेजी जाने वाली राशी नकद, सभा के एचडीएफसी बैंक बचत खाता नं0 50100023714552 (IFSC Code-HDFC0001324) में जमा करवाने के इलावा 'जाट सभा चंडीगढ़' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रेषित की जा सकती है जो कि आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है। आपसे यह भी निवेदन है कि सभा द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी हेतू आप अपना ईमेल पता इस कार्यालय को भेजें।

यह अपील जाट सभा चंडीगढ़ के प्रत्येक आजीवन सदस्य को डाक द्वारा व्यक्तिगत तौर से पहले भेजी जा चुकी है और दोबारा जाट लहर पत्रिका के माध्यम से प्रत्येक आजीवन सदस्य व आप सभी से पुनः अपील की जाती है कि समाज कल्याण के इस पुनीत कार्य के लिये यथा शीघ्र अपना भरपूर आर्थिक योगदान जाट सभा चंडीगढ़ को भेजने का कष्ट करें ।

आदर सहित।

भवदीय,
(राजकपूर मलिक)
महासचिव

समाज को खुशहाल कैसे बनायें?

HkjpUn t|u] ckMej

आदर्श एवं खुशहाल समाज वह होता है जो अपनी सामाजिक व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करता है। सामाजिक नियमों की पालना सभी को बराबर करवाता है। समाज में ऊंच–नीच, गरीब–अमीर, छोटे–बड़े की भावना को दूर रखता है। समाज में फैली कुरीतियों रूढ़ियों पर विजय पाने के लिये कटिबद्ध रहता है। समाज के हित में सदैव सभी को सद्भावना की ओर प्रेरित करता है। समाज की व्यवस्थाओं को तोड़ने वाले अमीर गरीब को बराबर का न्याय देता है। समाज की फिजूलखर्ची को रोकने एवं रूकवाने की क्षमता रखता है। समाज में फैलने वाली असामाजिक गतिविधियों पर कठोरता के साथ अंकुश लगाता है। समाज के लोगों के असमाजिक तत्वों द्वारा उत्पीड़ित करने की मादा हिम्मत रखता है। समाज में अशिक्षा के अन्धकार व नंगेपन के फैशन पर अंकुश लगाने वाला समाज ही आर्दश एवं खुशहाल समाज की व्यवस्था करने के लिए समाज के सभी वर्गों में आपसी एकता, समन्वय, सद्भावना, सहयोग सहानुभूति एवं विश्वास होना आवश्यक है। ऐसे आदर्श एवं खुशहाल समाज पर आने वाले सभी प्रकार के संकट स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं। लेकिन आजकल समाज के कर्णधार कहलाने वाले धनाढ्य वर्ग और समाज को विघटन के कगार पर धकेलने वाले समाज कंटकों, अड़ियलों की कमी नहीं है। जिसके कारण समाज अभावों का पीटारा बनता जा रहा है और अन्य समाजों के असामाजिक तत्वों का शिकार होकर अपने समाज के अस्तित्व को भी खो देता है। खतरे में डाल देता है।

सभी समाजों द्वारा अपने समाज की सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिये नेतृत्व का चयन भी करते हैं। अच्छा, ईमानदार, पक्षपात के बिना नेतृत्व करने वाले समाज का हित साधने में कामयाब रहते है। लेकिन कुछ महत्वाकांक्षी पदलोलूपता के लिए अच्छे नेतृत्व की बखियां उखाड़ने में लगे रहते हैं। जिसके पीछे इनका स्वार्थ एवं भाई भतीजावाद काम करता है। कहीं कहीं धनाढ्य वर्ग अपने अहम् की पूर्ति के लिये भी समाज को तोड़ने में टांग अड़ाई करते रहते हैं। यदि इन समाज विरोधी ताकतों से समाज के लोग निडर होकर लोहा लेते रहें तो हमारा समाज आदर्श एवं खुशहाल समाज बन सकता है।

समाज की व्यवस्थाओं के नियम और कायदे कानून भी समाज के लोग बनाते हैं और उसकी पालना करने के लिये सभी पाबन्द करते हैं। यही सही व्यवस्था है और यदि समाज का प्रत्येक वर्ग इसकी पालना करता है तो समाज कभी भी टूटकर बिखर नहीं सकता। लेकिन हो यह रहा है कि कुछ ताकतवर लोग, पैसे वाले, अपने धन के अहम् की पूर्ति करने के लिये समाज के नियमों, कायदे कानून को जानबूझकर तोड़ते रहते हैं और समाज उनके खिलाफ कार्यवाही करने में पंगू बनकर रह जाता है। ऐसी स्थिति में समाज में बिखराव होने लगता है और समाज की सारी व्यवस्थाऐं छिन भिन्न हो जाती हैं। यदि समाज को टूटने से बचाकर आदर्श एवं खुशहाल समाज बनाना है तो समाज के नियमों, कायदे कानून को तोड़ने वालों के खिलाफ भाई भतीजवाद से ऊंचा उठकर कठोर कार्यवाही करनी होगी।

सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवस्थाओं में सबसे बड़ी बाधा परम्परागत सामाजिक कूरीतियों–रूढ़ियों ने दबोच रखा है। फैशन ने समाज में अप्रिय, अनहोनी, ओछी एवं बलात्कार जैसी घिनौनी हरकतों को जन्म दे दिया है। भ्रूण हत्या ने अनाचार का समाज में बीजारोपण करते हुए भविष्य की सामाजिक व्यवस्थाओं को झकझोर रखा है। इतना ही नहीं समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग को भी समाज के रीति रिवाजों पर अन्धाधुध पैसा खर्च करने को मजबूर कर दिया है जिसके कारण आपसी असंतोष बढ़ने लगा है। कुछ सामाजिक तत्व जो अपने आपको समाज के कर्णधार, मुखिया, मसीहा समझकर समाज पर अनाधिकृत अपनी बात रखवाने को मजबूर करने का अशोभनीय प्रयास करते हैं जिसके कारण समाज के लोगों में आपसी संघर्ष बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार समाज के हितों की रक्षा की उपेक्षा करने वाले समाज विरोधी ताकतों का सभी लोग मिलकर मुकाबला करेंगे तभी इस अपने समाज को आदर्श एवं खुशहाल समाज का स्वरूप प्रदान करवा पायेंगे।

समाज को प्रगतिशील, विकासशील, आदर्श समाज बनाने के लिये समाज के बालक–बालिकाओं में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिये प्रेरित करना होगा। व्यसन से समाज को मुक्त रखते हुए धर्म के मार्ग पर आरूढ़ करने की पहल करनी होगी। ऐसी व्यवस्थाओं से समाज को दूर रखना होगा जिससे समाज किसी भी रूप में कलंकित नहीं हो। समाज के एक नेतृत्व में आस्था रखते हुए निर्धारित नियमों का ईमानदारी से पालन करना होगा। अमीर–गरीब की रेखा में कोई तुच्छ एवं हीनभावना उत्पन्न नहीं हो इसका विशेष ख्याल रखना होगा। समाज का हर वर्ग समाज के प्रति वफादार रहे इसके लिये जागरूक रहना होगा। समाज के उत्थान, विकास के लिये भावी योजनाओं को सर्वसम्मपति से स्वीकार कर उसे क्रियान्वित करने में सबको महत्वपूर्ण भागीदारी निभानी चाहिये यदि आप और हम सब मिलकर समाज के प्रति लगन, निष्ठा, ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता, एकता, समन्वय, सद्भावना, सहयोग, सहानुभूति से समर्पित हो जाय तो कोई ताकत हमारे समाज को आदर्श एवं खुशहाल समाज बनाने में कभी भी बाधक नहीं हो सकेगी।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।